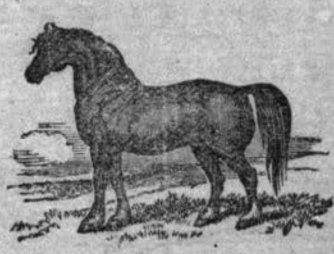
॥ ठगवृत्तान्तमाला ॥

भाषानुवाद ।

जिसमें अमीरअली नामक प्रसिद्ध ठग का वृत्तान्त उसके जन्म से लेकर अंगरेजों के हाथ बन्दी होने पर्य्यन्त दिया है ।

और जिसे

भारतजीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने कर्नल मेडोज़ टेलर साहब सी० एस० आई० की अङ्गरेजी ग्रन्थ से भाषा में उल्था कर एतद्देशनिवासियों की सावधानी के निमित्त प्रकाश किया ।



काशी ।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुआ ।

सन् १८८९ ई० ।

मूल्य बगेर जिल्द २)]   [मूल्य जिल्द बँधा हुआ ३॥)

भूमिका ।

हमारे पाठकों को निस्सन्देह इस "ठगवृत्तान्तमाला" को पढ़ कर बड़ा कौतुक और आश्चर्य होगा परन्तु इसमें कोई विशेष आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि ये बातें अभी हालही में हुई है और अब भी सैकड़ों पुरुष ऐसे वर्तमान हैं जो इन बातों की साक्षी दे सकेंगे कि ठग लोग किस प्रकार हजारों पुरुषों और यात्रियों की जान बात की बात में ले लेते थे और वे अनजान बिचारे इन दुष्टों के वाक्जाल में सहज स्वभावही फँस जाते थे। अनेकानेक धन्यवाद है उस करुणावरुणालय जगदीश्वर को कि जिसने हमें ऐसी प्रजारक्षक और दयालु गवर्मेंण्ट के हाथ में सौंपा है कि हम लोग आनन्द से दिन भर अपना कार्य्य करते हैं और रात्रि को निश्चिन्त हो पांव फैला कर सोते हैं। सैकड़ों हजारों कोस की यात्रा बिना परिश्रम और बिना रत्ती भर भय और खटके के कर आते हैं। एक वह समय था कि पांच पांच सौ यात्रियों के गरोह के गरोह साथही चलते थे, क्षण भर अपने समाज से मारे भय के अलग न होते थे और जो कदाचित् कोई खाने पीने की वस्तु या और कुछ आवश्यक सामान लेने के लिये इधर उधर अपने साथियों से छुटा कि वह ठग और उचक्के और लुटेरों के हाथ तले पड़ कर इस संसार से गया—अब वह समय है कि एक बच्चा भी हाथ में सोना उछालता हुआ चला जाता है और कोई भी नहीं पूछता कि तुम्हारे मुह में कै दाँत है, अब वह समय है कि साधारण पुरुष और अकेली स्त्री भी काश्मीर से सेतुबन्ध की यात्रा बिना भय के कर लेती है। उन दिनों बिना अस्त्र के सिपाही भी घर के बाहर बिना प्राण भय के न निकल सकता था अब सिपाही को कौन कहे महा से महा डरपोक भी रुस्तम बने घूमते हैं।

किस प्रकार यह ठगों का महा भयङ्कर व्यापार इतने दिनों तक भारतवर्ष में चला आया और यहां के लोगों से प्रायः गुप्त रहा यह वेही लोग ठीक जान सकते हैं जो यहां के भेदों से जानकार हैं। ये ठग लोग बसे हुये गांवों और कसबों में रहते और वहां के निवासियों से हिल मिल जाते थे, ये लोग

वहां सब प्रकार का बणिज व्यापार करते और कभी अपने पड़ोसी का स्त्री तक को भी खबर न करते कि वे ठगों का काम करते और यात्रियों को लूट मार कर माल लाते हैं ।

जब हम यह विचार कर देखते हैं कि अगले जमाने में रेल वा डाँक की सवारी तो थीही नहीं बिचारे यात्रियों को लम्बी से लम्बी यात्रा या तो पैदल या घोड़े की पीठ पर करना पड़ता था और मार्ग में परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहायता के लिये भिन्न २ यात्री मिल जाया करते थे जिनसे कभी न जान न पहिचान ; उन दिनों चौड़ी सड़कें तो बहुतही कम थीं केवल यात्रियों के चलने से जो पगडंडियां पड़ जाती थीं उन्ही पर से लोग यात्रा किया करते थे। ये पगडंडियां ऐसे २ उजाड़ जंगल और पर्वतीय तथा ऊसर प्रान्त से जाती थीं कि जहां कोसों तक गांव गवईं तो दूर रहे मनुष्य का नाम मात्र भी न दिखाई पड़ता था तो ऐसे अवस्था और मार्ग में यात्रियों का रक्षक ईश्वर के अतिरिक्त और कौन है? । इन्हीं कारणों से अनेक प्रकार के लुटेरे उन दिनों बहुत होते थे, बाजे तो धींगाधींगी अस्त्रों के बल से लूट मार करते थे और बाजे चुपके से माल चुरा चुरा कर चम्पत हो जाते थे परन्तु हाय ! सब से भारी दुष्ट ये ठग लोग होते थे जिनकी बहुतायत भारत में अनगिनत थी, जिन का बड़ा भारी मेल और एका रहता था और जो ऐसे गुप्त रीति से अपना भयानक व्यापार करते थे कि यात्रियों की जान इनके हाथ पड़ कर कभी न बच सकती थी ।

यह देखने में आया है कि यात्री लोग अपने यात्रा के समय जिन जिन प्रदेशों से होते जाते थे वहां केवल अपनी आवश्यकीय वस्तुओं के मोल लेने के अतिरिक्त कुछ विशेष सम्बन्ध न रखते थे, वे लोग प्रायः अपना डेरा बस्ती के बाहर डालते थे और बारियों में टिकते थे, एकाद दिन रह कर आगे बढ़ जाते थे इसी कारण जल्दी पता इस बात का न लगता था कि कौन यात्री कहां से आया और कहां चला गया । फिर दूसरी बात यह है कि भारतवर्ष में अनेक जाति अनेक धर्म और धन्धे के लोग होते हैं अतएव चोर ठगों को भेष बदल कर उन से मिल जाने का अधिक सुभीता पड़ता है । उन दिन

सरकारी मनीआर्डर तो था ही नहीं अतएव एक स्थान से दूसरे स्थान को रुपया पैसा सोना चांदी जर जवाहिर भेजने में बड़ी दिक्कत पड़ती थी परन्तु लाचार हो कर भेजना ही पड़ता था तो ऐसे यात्री लोग जान बूझ कर फटे चीथड़े पहिन लेते थे कि जिस से वे साधारण मनुष्य जान पड़ें, जो बिचारे साधारण यात्री होते थे उन्हें और कुछ न हुआ तो राह खर्च के लिये तो सौ दो सौ चार सौ पास रखना ही पड़ता था फिर एक दिक्कत यह होती थी कि जिस राज्य वा रियासत से वे यात्री लोग जाते थे वहां के चुंगी वालों को सब माल असबाब दिखाना पड़ता था और यह प्रायः होता था कि ये चुंगी वाले और उन के भेदिये ठगों और डाकुओं को सूचना दे देते थे जिस में लड्डू फूटे तो चूरचार हाथ लगे।

थोड़े दिन हुये कि पता लगाने से यह विदित हुआ है कि भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में बड़े २ खानदानी ज़िमीदार लोग और उनके पुरखे सेकड़ों बरस से ठगों से सम्बन्ध रखते आये हैं, उन्हें यात्रियों के मारने में सहायता देते और जहां तक बनता बिना दण्ड के भगा देते या छुड़ा लेते थे, और इस के बदले या तो लूट का एक भाग पाते या उन ठगों के मकानों पर किसी प्रकार का टिकस लगा लिया करते थे जिसे वे ठग लोग प्रसन्नतां पूर्वक देते थे। प्रायः प्रत्येक गांव और नगर में अनेक ठग सन्त साधु फकीर योगी तपस्वी का भेष धर कर घूमते और बसते थे, इन्हीं के यहां इन रोज़गारी ठगों का जमावड़ा हुआ करता था क्योंकि ये लोग प्रायः बारी अमराई में अपनी धूनी रमाये रहते थे। इन फकीरों और साधुओं का यह काम था कि राह चलते थके मांदे यात्रियों को हुक्का तमाखू या जल वायु के बहाने से टिका लेना और उन्हें ठगों के जाल में फंसा देना। हाय! हाय!! ये नीच लोग किस प्रकार अपने धार्मिक पवित्र वस्त्र को टट्टी बना कर बिचारे भोले भाले यात्रियों का शिकार करते थे!!! इन्हीं सुभीतों के कारण तथा और भी सेकड़ों ऐसी बातें हैं जो कही नहीं जा सकती कि यह ठगी का व्यापार समग्र भारतवर्ष में प्रचलित था।

इस ठगी के व्यापार का आदि कारण समय अंधकारमय है, कुछ ठीक पता नहीं लगता कि कैसे और कब से इसका आरम्भ हुआ। करनल स्लीमान साहब

अनुमान करते हैं कि इस की उत्पत्ति उन लुटेरू और घुमन्ते मुसलमानों के समय से है कि जो मुगल और तातारों की चढ़ाई के बहुत दिन उपरान्त देश में लूट मार करते थे। हिन्दू ठग लोग कहते हैं कि इस की उत्पत्ति भवानी देवी से है, परन्तु हिन्दू और मुसलमान दोनों जाति के ठग भवानी के उपासक होते है इस से जान पड़ता है कि इस का आरम्भ हिन्दुओं ही से है। यद्यपि जबानी हाल तो इस का बहुत प्राचीन जान पड़ता है परन्तु अकबर के समय के पूर्व कहीं किसी इतिहास में इस का लेख नहीं पाया जाता। अकबर बादशाह के समय में बहुत से ठग पकड़े और मारे गये थे। तब से ले कर सन् १८१० ई० तक इसका नाम तक भी अंगरेजी गवर्मेंण्ट को न मालूम था यद्यपि कभी २ देशी रजवाड़ों में अनेक ठग लोग पकड़े और मारे जाते थे। सन् १८१० ई० में जब सेना बहुत से सिपाही के अपने घर को आते जाते मार्ग में गुम हो गये तो कमाण्डर इन्‌चीफ साहब ने यह आज्ञा और सूचना प्रकाश की कि सैनिक सिपाही लोग ठगों से सावधान रहा करें। सन् १८१२ ई० में जब लफ़टेनैण्ट मानसेल की ठगों ने मारा तो मि० हालहेड साहब अपनी सेना को ले कर उन गांवों पर चढ़ गये जहां ठगों के रहने का पता लगा था परन्तु ठगों ने बड़ी बीरता से इन का साम्हना किया। मालूम हुआ कि सिंदौसी परगने के अनेक गांवों में ठगों का निवास है और वे लोग कई पुश्त से असंख्य धन सेंधिया गवर्मेंण्ट को अपनी रक्षा के निमित्त देते आये हैं। उस समय पता लगाने से जान पड़ा कि ९०० ठग के पार तो केवल इन्हीं गांवों में रहते हैं। मि० हालहेड की सेना और ठगों से जो लड़ाई हुई उसके उपरान्त ठग लोग छितिर बितिर हो गये और दूर दूर के देशों में भी ये लोग फैल गये जहां कदाचित् पहिले कभी न गये थे।

पाठकों को आश्चर्य जान पड़ेगा कि जब ठगों का वृत्तान्त सरकार को मालूम हो चुका था तो क्यों नहीं उसी दम उन का प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया और क्यों सन् १८१६ ई० तक ऐसे आवश्यक कार्य्य में बिलम्ब किया?। मद्रास के किसी समाचार पत्र में डाक्तर शेरउड ने दक्खिन के ठगों का चाल व्यवहार और उनके रीत रस्म का विलक्षण वृत्तान्त छापा था जिसे उस समय

लोगों ने कदाचित् उतना विश्वास न किया था; परन्तु यह निश्चित है कि तब से ले कर सन् १८३० ई० तक प्रायः भारतवर्ष के सभी प्रदेशों में और विशेषतः बुन्देलखण्ड और मालवा के पश्चिम प्रान्त में सैकड़ों ही ठग और उन के समूह के समूह मेजर वार्थविक्, कप्तान वार्डलो और कप्तान हेनली साहब ने पकड़ कर फांसी दिलवा दिया। अनेकानेक ठग यात्रियों की प्राणहत्या करने के कारण पकड़ २ कर लटका दिये गये परन्तु सर्वसाधारण ने कुछ भी ध्यान न दिया। परन्तु इतने पर भी इस व्याधि की जड़ मूल से नाश करने का कोई उपाय न किया गया था कारण यही था कि इस का पूरा हाल सरकार को न मालूम था कि इस ठगी का व्यापार और कारखाना ही निराला खड़ा है।

सन् १८१६ ई० में और इस के कुछ वर्ष पूर्व ठगी का अत्याचार बहुत ही भयानक हो गया था और अब ऐसे भारी अत्याचार पर जो दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता जाता था सरकार कैसे चुप रह सकती थी। मि० ष्टाकवेल, स्मिथ, विल्किन्सन और बोर्थविक् इत्यादि सरकारी अफसरों ने अब इस ओर ध्यान दिया। जो ठग लोग पूर्व में पकड़े गये थे उन में से कई एक फांसी से इसलिये बचा लिये गये थे कि वे अपने साथी तथा दूसरे ठगों का नाम पता और भेद बतावें; इनमें फिरंगिया नामक ठगों का सरदार अत्यन्त प्रसिद्ध था।

इस फिरंगिया नामक ठग से जो जो भयानक वृत्तान्त नर्बदा प्रान्त के पोलिटिकल एजेन्ट करनल स्लीमान साहब ने पाया है जिन के सुनने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं ऐसे हैं कि उन पर विश्वास किसी प्रकार नहीं होता था परन्तु जब जहां जहां वह टिकता था और जहां २ उसने बतलाया वहां २ खोदने से कम से कम तेरह तेरह आदमियों की हड्डियां निकलीं तो उसके कहने पर विश्वास आया। उसके कहने के अनुसार काम किया गया और झुंड के झुंड ठग लोग जो राजपुताने में ठगी पर जाने के लिये तयार थे पकड़े गये और कोल्हू के तले पीस दिये गये।

इस समय से लेकर ठगी की खोज सरकार पूरी तरह करने लगी। प्रत्येक झुण्ड में से एक या दो ठग भरती किये गये, और जब उन्हों ने देखा कि अब प्राणरक्षा का कोई उपाय बिना अपने साथियों के बताये नहीं है तो उन्हीं ने

लाचार हो कर उनका भेद बताया और उन लोगों के बतलाये हुये भी स्थान खोदे गये और बिचारे यात्रियों की हड्डियां वहां से निकलीं ।

इस प्रकार जान पड़ा कि ठगी की प्रबलता समग्र भारतवर्ष में थी, पहिले पहिल सब यही जानते थे कि केवल मध्य भारतवर्ष में ही ठगी होती है परन्तु ज्यों ज्यों दूर से लोग पकड़े गये त्यों त्यों ऐसों का हाल बतलाया सो सर्वत्र नर-हत्या नित्य ही करते फिरते थे । धीरे धीरे होते होते जान पड़ा कि हिमालय से ले कर कन्याकुमारी तक और कच्छ से लेकर आसाम पर्य्यन्त कोई भी ऐसा प्रदेश न था जहां ठगहारी न होती हो और जहां पृथ्वी खोदने पर मुर्दे न निकले हों ! !!

जो लोग सन् १८३१ और १८३२ के साल में भारतवर्ष में थे उन्हें कभो न भूलेगा कि उन दिनों इन मुर्दों की खोज और उन की लाश निकलने से देश में कैसा हलचल मचा था; कितने ही मजिष्ट्रेट लोग तो इस बात पर विश्वास ही नहीं करते थे कि यह भारी अंधेर चुपके २ उन के अधिकार में भी हुआ ही करता है और उन्हें रत्ती भर खबर नहीं होती । हम निम्नलिखित वृत्तान्त को करनल स्लीमान साहब के अत्यन्त मनोहर ग्रंथ के उपक्रम में से यहां उद्धृत करते हैं ।

जब सन् १८२२, १८२३ और १८२४ ई० में, मैं नर्बदा की तराई में नरसिंहपुर ज़िले का अधिकारी था तो ऐसी कोई साधारण भी चोरी या डकैती न होने पाती थी कि मुझे उसका पता न लग जाता और कोई ऐसा लुटेरू और चोर न था कि जिस की चालचलन मुझे भली प्रकार विदित न हो क्योंकि मैं तो वहां का मजिष्ट्रेट ही था:—यदि उस समय किसी ने मुझ से यह कहा होता कि मेरी कचहरी से केवल ४०० गज फासले पर कुंडेली गांव में झुंड के झुंड रोजगारी नरहत्याकारी रहते हैं, या मेरे स्थान से एक मंजिल की दूरी पर सागर और भूपाल के रास्ते में मुंडेसर गांव की बारियां मुर्दों की भारत में सब से भारी 'बिल' है और झुंड के झुंड डांकू हिन्दुस्तान से दक्खिन जाते समय इन्हीं बारियों में अपना जमावड़ा करते हैं और हर साल कई दिन तक डेरा किये रहते हैं तथाच इन्हीं बारियों के स्वामी दो प्रसिद्ध ज़िमीदारों की सहा-

यता और उपेचा से ये दुष्ट अपना भयङ्कर व्यापार आते जाते यात्रियों पर करते हैं तो मैंने निस्सन्देह उस मनुष्य को पागल वा मूर्ख समझा होता। परन्तु नहीं, ये सब बातें सत्य हैं, सैकड़ों यात्रियों की लाश कुडेमर के इन बारियों में गड़ी हुई मिलीं और झुंड के झुंड प्राणनाशक डांकू मेरी मजिष्ट्रेटी की समय इस कुंडेली नामक गांव में बसते थे और अपना यह भयानक कृत्य पूना और हैदराबाद की नगरीं पर्य्यन्त फैलाये हुये थे।

जैसे यह ठगी का भयानक व्यापार होता था ठीक उसी प्रकार यह नीचे लिखा हुआ वृत्तान्त भी है कि हिंगोली के सदर मुकाम में, ज़िले भर के ठगों का सरदार, हरीसिंह नामक एक प्रसिद्ध और देखने में विश्वासपात्र व्यापारी रहता था जिस के साथ मेरा भी लेन देन हुआ करता था। एक बेर उस ने उस ज़िले के सिविल अफसर कप्तान रैनाल्ड्स के पास यह दर्खास्त दी कि मुझे बम्बई से कुछ कपड़ा खरीद के लेना है इसलिये मुझे सर्कार से पास दिया जाय परन्तु उसने पहले ही से इस बात का पता लगा लिया था कि हिंगोलीनगर के समीप का एक सौदागर उन कपड़ों को बम्बई से लिये हुये चला आता है। वह पास ले कर गया और रास्ते में उस व्यापारी से मिला, वहां उसे तथा उस के साथी और सहीस लद्वैये को मार कर सब माल असबाब ले हिंगोली तक ले आया और खुलेमैदान बाज़ार में उनकी बिक्री करने लगा। इसका पता कभी न लगता यदि उसने गिरफ़्तारी के उपरान्त यह सब हाल स्वयम् न कहा होता जिसे उसने बड़ी शेखी के साथ सुनाया कि उसने कैसी दिल्लगी की थी। इस मनुष्य और इसके साथियों ने कितने ही मनुष्यों को सदर बाज़ार के अन्दर ही सरकारी गारद से केवल एक सौ गज के दूरी पर मारा था और सन्तरियों के पहरे से पांच सौ गज की दूरी पर गाड़ दिया था। कई बेर तो मैं स्वयम् उन स्थानों पर उपस्थित था कि जहां इन बिचारे भाग्यहीन यात्रियों की लाश कबर खोद कर निकालीं गईं थीं। ये स्थान इन्हीं दुष्टों के द्वारा मालूम किये गये और इतनी लाशें निकलीं कि मुझे देखते २ घृणा होगई। यह स्थान सदर बाजार के समीपही के उस सड़क पर था जो गांव की ओर जाता है और जहां एक छोटा सूखा सा नाला पड़ता है जो आगे जाकर नदी में मिल गया है।

जब इस प्रकार उन अफसरों ने जो सरकार से ठगी का पता लगाने के लिये नियत किये गये थे देखा कि भारतवर्ष में ठगी के भयङ्कर व्यापार को जड़ मूल से उखाड़ने की आवश्यकता है तो और भी अधिक परिश्रम और हिम्मत के साथ इस काम में लग गये जिसमें सरकार को इसका विशेष वृत्तान्त शीघ्र जान पड़े और यह भयानक आपत्ति भारतवर्ष से दूर हो। उस समय के गवर्नर जेनरल लार्ड विलियम बेण्टिङ्क साहब और सुप्रीम कौंसिल ने इस का प्रबन्ध बड़ी धूमधाम से प्रारंभ किया और कई एक अत्यन्त प्रवीण अफसर उन जिलों में नियत किये गये जहां ठगी का विशेष पता पाया गया। अनेक देशी राजाओं ने भी उन लोगों को जो ठगी के अपराध में पकड़े गये या भेद बताने वाले ठगों के द्वारा बतलाये गये सरकार के सपुर्द बिना उज्र कर दिया और यद्यपि अनेक स्थानों में जिमीदारों और पटेलों ने ठगों की रक्षा की और उन्हें दण्ड देने से प्रायः बचाया तो भी ठगी के नाश करने की सरकारी कार्रवाई क्षतकारी होती ही गई। ज्यों २ सन्देह बढ़ता गया त्यों २ इस बात का दृढ़ प्रबन्ध होता गया कि कोई यात्रियों का समूह चाहे वह कहीं जाता हो बिना सरकारी पुलिस के भेद बतलाये या भेदिये ठगों के देखे न जाने पाता था। यह प्रबन्ध प्रत्येक मुख्य स्थान और नगरों में किया गया था।

ठगी विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट कप्तान रेनाल्ड्स साहब के नीचे लिखे रिपोर्ट से ज्ञात होगा कि कहां तक सर्कार की कार्रवाई इस विषय में क्षतकारी हुई है।

सन् १८३१ ई० से १८३७ ई० तक।

१०५९ ठग काले पानी भेजे गये।	११ ... जेलखाने से भाग गये।
४१२ ... फांसी दिये गये।	३६ ... जेलखाने में मर गये।
८७ ... जीवन पर्य्यन्त कठिन परिश्रम के साथ कैद किये गये।	१७२७
२१ ... जमानत न देने के कारण कैद किये गये।	४८३ भेदिये नियत किये गये।
६९ ... भिन्न २ समयों के लिये कैद किये गये *।	१२० अपराध प्रमाणिक होने पर भी दण्ड नहीं दिया गया।
३२ ... मुकद्दमा फैसल होने पर छुट गये।	९३६ भिन्न २ जेलखानों में पड़े हैं जिन का मुकद्दमा अभी लों नहीं हुआ।

* अर्थात् कोई १० कोई १२ कोई १५ वर्ष के लिये कैद किये गये।

इन के सिवाय कप्तान रेनाल्ड्स साहब कहते थे कि उस समय १८०० सौ प्रसिद्ध ठग ऐसे थे जो अभी पकड़े नहीं गये थे परन्तु उन के नाम रजिस्टर में चढ़े थे; पर जो अब तक न मालूम थे और जो देश में उपद्रव करते फिरते थे उन की गिनती कौन कर सकता है।

अब विचारना चाहिये कि ठगी का वृत्तान्त मालूम होने अथवा पूर्ण रीति से प्रबन्ध होने के पूर्व भारतवर्ष में कितने हजार मनुष्य मारे गये होंगे अथवा कितना असंख्य धन लूटा गया होगा। जिन दिनों में महराष्ट्र और पिंडारी लोगों से युद्ध हो रहा था उस समय ये लोग बराबर अपने भयानक व्यापार में लगे थे। सन् १८३१ ई० से किसी २ प्रकार इनकी महा घनघोर हत्याओं को रोकने का किञ्चित् प्रबंध हुआ; और जब यह बात देश भर में फैल गई तो न जाने कितनी करुणामय चिट्ठियाँ इस ठगी विभाग के अफसरों के पास आईं जो उन लोगों के सम्बन्धियों ने भेजी थीं कि जिन के रिश्तेदार लोग अचानचक मार्ग में गुम हो गये थे। इन चिट्ठियों में इस बात की प्रार्थना थी कि सरकार कृपा कर उनके नष्ट सम्बन्धियों के लाशों का पता लगावे कि उन्हें इन ठगों ने कहां गाड़ दिया था जिसमें वे लोग उन मृत सम्बन्धियों का क्रिया कर्म करके संतोष कर सकें—इन बातों से विदित है कि सर्वसाधारण समाज में कैसा हलचल उन दिनों मच गया था।

जो कुछ ठगी का वृत्तान्त हम आगे लिखेंगे केवल उतना ही न समझना चाहिये। हाल में यह भी जान पड़ा है कि कितने ही ठग लोग माँझियों के भेष में नावों पर रहते थे और यात्रियों को अपने जाल में फँसा कर मार के नदी में डाल देते थे परन्तु अनेक दुष्ट ऐसे भी थे कि यात्रियों के वृद्ध माता-पिताओं को मार कर लड़कों को तो गुलाम बना कर बेंचते थे और लड़कियों को वेश्याओं के हाथ बेच कर देश में व्यभिचार फैलाते थे।

समग्र भारतवर्ष में १८ अफसर ठगों का पता लगाने और उन्हें दण्ड देने के लिये सुपरिण्टेण्डेण्ट मुकर्रर हुये थे परन्तु ऐसे महत् प्रदेश में इतने लोग ऐसे भारी काम करने के लिये बहुत कम थे।

जो कुछ वृत्तान्त हम यहां लिखेंगे वह सब रत्ती रत्ती सत्य और यथार्थ है। यह सब हाल करनल मेडोज़ टेलर साहब सी० एस० आई० ने उस ठग से पाया है कि जिसे उन्हों ने बड़े परिश्रम से पकड़ा था । इस की भाषा उर्दू मिश्रित खड़ी बोली इस कारण रक्खी गई है कि इस वृत्तान्त का कहने वाला अमीरअली नामक ठग जात का मुसलमान था । यदि हमारे पाठकों को इस के पढ़ने से कुछ भी सावधानी और चतुराई प्राप्त होगी और यदि वे गवर्मेण्ट को इस आपत्ति से बचने के लिये कुछ भी धन्यवाद देंगे तो हम अपने अनुवाद का परिश्रम सफल समझेंगे।

रामकृष्ण वर्म्मा
सम्पादक भारतजीवन—बनारस ।



थके हुये मुसाफ़िर की तसवीर ।

Vrij Bhushan Das

॥ ठगवृत्तान्तमाला ॥

(पहिला अध्याय)

साहब, आप जो मुझ से मेरी ज़िन्दगी का हाल पूछते हैं तो मैं बेशक आप को सुनाऊंगा; आप उसे समझ भी सकेंगे क्योंकि आप हमारे मुल्क के लोगों का हाल अच्छी तरह जानते हैं, और चूंकि जैसा आप ने कहा है कि आप अपनी आगाही के लिये इसे सुना चाहते हैं तो मैं भी बेधड़क अज़ सरोपा आप को सुनाऊंगा; गोकि अब मैंने अंग्रेज़ों की नौकरी या गुलामी मंज़ूर कर ली है तो भी जो जो बहादुरी के काम मैंने किये हैं उन्हें अब तक मैं दिलेरी और हिम्मत के साथ याद करता हूं। उन्हें ख्याल करने से अक्सर मेरा दिल जोश खाता है और यही तबीयत होती है कि फिर भी एक मरतबे मैं अपने बहादुर साथियों को ले कर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक लूट की उम्मेद से मुल्कों की सैर करता।

मगर अफ़सोस! वह वक्त ही गुज़र गया! साहब, जान हर एक को प्यारी होती है। अपनी जान बचाने के लिये जिसे आपके क़ानून के मुताबिक मैं खाया करचुका हूं मैंने आपकी नौकरी की पाबन्दी इस बातसे करली है कि मैं अपने पुराने साथियों का नाम आप को बतला दूं और आप खूब जानते हैं कि किस उमृदगी से मैंने अपना काम किया है। मेरे गरोह में जितने लोग थे और जिन से मुझ से कुछ दिनों के लिये भी मुलाकात हो गई थी उन में से बहुत कम ऐसे हैं जो न पकड़े गये हों; कितीने ही तो इंसाफ के हाथ तले मारे गये और बाकी जो भाग कर इधर उधर भटकते फिरते हैं और जिन का पीछा आप जगह ब जगह कर रहे हैं उन के हालात से भी मैं आप को इस कदर वाकिफ़ कर चुका हूं कि वे जलद गिरफ़्तार हो कर सज़ा पावेंगे। पर तो भी ठगी—जो दिल में इस कदर जोश दे सक्ती है—दुनिया से नेस्तनाबूद न होगी, और न हो सकती है! देखिये सैकड़ों क्या मै कह सकता हूं कि हज़ारों ने इस के लिये अपनी जान दी है। पर इस से क्या गिरफ़्तार शुदों की गिनती कभी घटती है? नहीं! बल्के बढ़ती ही जाती है और आप देखते ही हैं कि

जो ठग फांसी की बनिस्बत ता उम्र की कैद मंजूर करता है उससे आप नया ही हाल सुनते हैं जो मैंने भी कभी न सुना था और यह देखने में आता है कि जिन मुल्कों में ठगी का मुतलक़ अफ़ीशहा न था वहां भी ठगी होती थी और होती है।

मैंने कहा, अमीर अली! बेशक, जो तुम कहते हो सही है, गोकि तुम्हारा यह पुराना रोज़गार अब तक वैसा ही चमक रहा है मगर यह हमेशा नहीं निभ सकता, अब यह चन्दरोज़: है। इन्सान जब इस तरह जंगली जानवर की मानिन्द पीछा किया जायगा तो थक जायगा, खसूसन् जब वह गिरफ़्तारी पर फांसी लटकाया जाता या उससे भी बत्तर कालेपानी भेज दिया जाता है, और अब गवर्मेंण्ट इस सर्गर्मी से ठगों का पता पाने पर उन का पीछा करती है कि कुछ दिन बाद इस हिन्दुस्तान में ऐसी कोई जगह न बचेगी कि जहां तुम्हारी ठगी चल सके।

अमीरअलीने कहा साहब कसूर माफ़ हो, यह आप की ग़लतफ़हमी है जो ऐसा ख्याल फ़र्माते हैं, आप नहीं जानते कि किसकदर मुस्तैदी और हिम्मत ठगों की अपने रोज़गार में होता है। जहां तक मैं समझता हूं मेरा यही ख्याल है कि जब तक एक ठग भी दुनियां में जीता रहेगा वह दूसरों को जमा कर एक गरोह खड़ा कर ही लेगा और मेरे इस कहने की सचाई आप को तब जान पड़ेगी कि जब आप मेरी ज़िन्दगी का हाल सुन लेंगे।

आपही देखिये कि आप अंगरेज़ लोग किस जांफ़िशानी के साथ शिकार के पीछे लगे रहते हैं, उसी के ख्याल और उसी के फ़िक्र में आप के कई दिन क्या महीनों सर्फ़ हो जाते हैं। चाहे शेर हो, चाहे चीता हो भैंसा हो या सूअर हो, आप लोग उस के मारने में हद से ज्याद: कोशिश करते हैं बल्कि उस के शिकार में जान तक की नोबत आजाती है; तो आप ही ख्याल फ़र्मावें कि ठगों का काम तो इससे कहीं आले दर्जे का है!!! यह तो आदमी का शिकार करना है! यह उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने लड़कपन से लेकर पीरी तक इस बात की कसम खाता है कि वह इन्सान की बर्बादी हर हालत और हर वक़्त करता ही रहेगा!!!

"वाह!" मैंने कहा तो तुम सब के सब बड़े भारी फ़सादी और बदमाश हो, इन हररोज़ के खून की रिपोर्टों से मुझे इतना तजरुबा तो बेशक होगया है खास कर तुम्हारे बारे में!—खैर तुम अपना हाल शुरु करो, मेरी ख़ाहिश है कि मै इन बातों का खुलासा हाल जानूं जिसे मैं ख्याल करता हूं कि कोई इनसान हरगिज़ न कर सकेगा अगर वह दरहकीकत इनसान है।

अमीरअली ने कहा बजा है जैसा आप ख्याल फर्माते हैं सही है, मैं हरगिज़ आप से कोई बात न छिपा रक्खूंगा। इस में शक नहीं कि आप मेरा हाल उस वक्त से सुना चाहते होंगे कि जब से मुझे कुछ भी याद या होश हो।

बेशक! मैंने कहा—मैं तुम्हारा हाल अपने उन दोस्तों की आगाही के लिये लिखता हूं जो इङ्गलांड में रहते हैं फ़िलहक़ीक़त वे तुम्हारे ऐसे मशहूर आदमी का हाल मुफ़स्सल जानना चाहते होंगे।

बहुत अच्छा, साहब तो मैं बिसमिल्ला करता हूं—सब से पुरानी बात जो मुझे याद आती है यों है कि होलकर की रियासत में एक गांव था जहां मेरी पैदाइश हुई थी। मैं नहीं जानता कि मेरे वालदैन कौन थे। अन्दाज़न् कह सक्ता हूं कि वे इज़्ज़तदार रईस थे क्योंकि मैं सोने चांदी के गहने अक्सर पहने रहता था, दोचार नौकर चाकर भी मेरे साथ रहते थे, मुझे कुछ २ ख्याल है कि मेरी मां कद में कुछ लंबी थी और एक बुड्ढी औरत का भी मुझे ख्याल आता है कि मेरे साथ रहा करती थी, शायद वह मेरी धाय थी; मेरी एक छोटी बहिन भी थी जिसे मैं बहुत प्यार करता था। इसके सिवाय मुझे कुछ याद नहीं है, पर हां, क्योंकर मैं ठग हुआ और वह कौन सी वारदात थीं मुझे अबतक याद है।

एक रोज़ घर में लोगों को ज्यादातर मशगूल पा और कपड़े वा दीगर ज़रूरी सामान की गठरियों का बंधना देख कर मैंने समझा कि कहीं सफ़र की तयारी होती है। मेरा ख्याल सही उतरा क्योंकि दूसरे दिन सुबह को हम लोग रवाना हो पड़े। मैं अपनी वालिदा के साथ एक डोली में था, चम्पा बुढ़िया मेरे टट्टू पर थी और मेरे वालिद अपने बड़े घोड़े पर सवार थे, हमारे बहुत

से हमसाये भी हम लोगों के साथ थे; चूंकि वे सब हथियार बन्द थे इससे मैं ख्याल करता हूं कि कुछ दूर तक साथ पहुंचाने के लिये आये थे।

अपने गांव से रवाना हो के तीसरे या चौथे रोज़ शाम के वक़् बाद मंज़िल तै करने के हमलोग साबिक़ दस्तूर एक गांव के खाली दूकान में जाकर मुक़ीम हुये। मेरे वालिद तो किसी काम से कहीं चले गये मगर मेरी वालिदा जो बाहर न निकलती थी मुझ से यह कह कर कि मैं खेलता २ कहीं आगे न चला जाऊं अंदर की कोठरी में जा कर सो रहीं। चम्पा खाना पकाने में लग रही थी और साथ के जवान लोग भी इधर उधर चलेगये थे, मैं अकेला रह गया और अपनी मां का हुकुम भूल कर गली के लड़कों के साथ खेलने लगा। हम लोग सब कूद फांद रहे थे कि एक भला सा नौजवान कोई आधी उम्र का मेरे पास आकर मुझ से पूछने लगा कि तू कौन है क्योंकि मेरी चाल ढाल उन गंदे मैले कुचैले चीथड़ा लपेटे हुये लड़कों से कुछ मुख़लिफ़ थी और कुछ ज़ेवर भी चांदी सोने के पहिने था—मैने कहा कि मेरे वालिद का नाम यूसफ़खां है और वे मुझे और मेरी वालदा को साथ लेकर इन्दौर जाते हैं।

उसने कहा—"आहा! तुम लोग वेही शख़्स हो जो कल रास्ते में मुझे मिले थे, तुम्हारी मां बैल पर सवार थी, क्यों ठीक है न"? मैने गुस्से से कहा नहीं वह तो पालकी में चलती हैं और मैं भी उन के साथ रहता हूं और मेरे वालिद एक बड़े घोड़े पर सवार होते हैं हमारे साथ चम्पा और कई एक जवान लोग भी हैं—क्या आप समझते हैं कि मेरे वालिद से पठान मेरी मां को बैल पर सवार करावेंगे जैसे किसान लोग करते हैं?

उसने कहा "ठीक है छोटे ख़ान बहादुर! तुम्हारा कहना सही है चन्द रोज़ में तुम बड़े घोड़े पर भी सवार होगे और मेरे मुवाफ़िक़ ढाल तलवार बांधोगे? भला तुम्हें कुछ मिठाई दूं? लो देखो कैसी मज़ेदार जलेबियां इस हलवाई के दूकान पर चमक रही हैं, आओ मैं तुम्हें कुछ खरीद दूं।

आप जानतेही हैं साहब, कि मिठाई का नाम लड़कों को कैसा प्यारा लगता है, अव्वल तो मैने हलवाई की दूकान की तरफ़ देखा और बादज़ां उस के साथ चल पड़ा।

उस ने मुझे बहुत सी मिठाई खरीद दी और कहा के घर जाकर खाना, मैंने उस मिठाई को अपने रूमाल में बांध लिया जो मेरे कमर में था औ डेरे की तरफ चला। जिन लड़कों के साथ मैं खेल रहा था उन्हीं ने मुझे जलेबी लेते देख लिया और लगे आंखे फाड़ फाड़ कर देखने और ज्योंही वह शख्स निगाह से हटा त्योंही वें सब मुझ पर गई और पत्थर फेंकने लगे; आखिरकार एक लड़का जो उन सभों में हिम्मतवर था मुझ से मिठाई छीनने लगा। मैंने अपने भरसक कोशिश की और लड़ने लगा मगर उन सबों ने मुझे घेर लिया और मेरी जलेबियां लूट ले गये। जब इस से भी उनका दिल न भरा तो एक बड़े लड़के ने मेरी सोने की तावीज़ पर जो मैं गले में पहिने था हाथ डाला। तब तो मैं अपने ज़ोर भर चिल्लाने लगा; मेरी चिल्लाहट सुन कर वह शख्स जिसने मुझे जलेबियां दी थी आ गया, उसे देखते ही सब लड़के भाग गये और वह मुझे अपने साथ ले कर मेरे मकान पर आया और मुझे चम्पा के सपुर्द करके लड़कों के लड़ने का सब हाल सुनाया और कहा देखो खबरदार! फिर कहीं यह लड़कों के साथ न निकल जावे।

मैं ज़ार ज़ार रो रहा था कि मेरी वालिदा ने अजनबी शख्स की आवाज़ सुन कर मुझे अपने पास बुलाया और रोने का सबब पूछने लगीं, मैंने अपना सब हाल सुनाया और कहा कि जिस शख्स ने मुझे बचाया है वही चम्पा से बातें कर रहा है। उस ने कपड़े के अन्दर से जो बतौर पर्दे के लटकता था उस शख्स की शुकरगुज़ारी अदा की और कहा कि इस वक़्त तो साहब खाना (इसके वालिद) बाहर गये हैं अगर आप घंटे दो घंटे में फिर भी एक मरतबः तकलीफ फरमावें तो उन से आप की मुलाकात होगी और मुझे उम्मेद है कि वे भी आप की इस मेहरबानगी और लड़के की हिफाज़त के लिये शुकरगुज़ार होंगे। उस ने कहा मैं शाम को आऊंगा; उस के जाने पर कुछ देर बाद मेरे वालिद आये और मुझे उस आवारगी के लिये खूब मार पड़ी मगर मेरी वालिदा ने उस मिठाई में से थोड़ा सा मुझे देकर सब्र दिया और चुप कराया। जो सच पूछिये तो वही मिठाई मेरे मार खाने और खास कर मेरी इस हालत की असल बुनियाद थी। आप देखते हैं साहब कि किसमत कैसी २ खफ़ीफ़ बातों से अपना वसूल बनाती है।

अनकरीब शाम के वक़ वही शख़्स एक दूसरे आदमी को साथ लिये हुआ आया। उस से और मेरे वालिद से बहुत देर तक मेरे ही बारे में गुफ़्गू होती रही, बादअज़ां दूसरी २ बातें होने लगीं और मुझे याद है कि मैंने ठग का लफ़्ज़ पहिली मरतबः वहीं सुना। मुझे यह भी याद है कि वे लोग मेरे वालिद को इस बात से खबरदार करते थे कि आगे इन्दौर के रास्ते में बहुत ठग मिलते हैं। उन्हों ने कहा कि हम लोग सिपाही हैं जो इन्दौर से किसी काम के लिये आये थे और चूंकि हम लोगों का गरोह भारी है बेहतर होगा कि आप लोग हमारे ही साथ चलें। जिस शख़्स ने मुझे जलेबियां दिलाई थीं वह मुझ पर बहुत मेहरबान था, मैं उसकी तलवार से खेल रहा था। उसने मुझ से कहा कि कल मैं अपने कबक तुम्हें अपने घोड़े पर सवार कराऊंगा। मैं इस उम्मेद पर निहायत खुश था और उस शख़्स की मेहरबानगी और हर दिल अज़ीज़ी के सबब उस से निहायत हिलमिल गया मगर मुझे उस दूसरे शख़्स की शकल से बड़ी नफरत थी जिस्का हाल मैं आप को आगे चल कर बहुत कुछ सुनाऊंगा।

दूसरे दिन सुबह को हम लोग रवाना हुये। वे दोनों शख़्स और उनके आदमियों से हमारी मुलाकात गांव के बाहर एक आम के बाग़ में हुई जहां उन का खेमा लगा था वहां से हम लोग सफ़र में हमराह हुये। दो दिन तो इसी तरह चले गये और मेरा वह दोस्त बमूजिब अपने करार के मुझे अपने साथ अपने घोड़े पर सवार करा लेता था, अक्सर मुझे घोड़े की पीठ पर अकेला छोड़ कर पाय्यादा घोड़े के आगे २ चलता और चूंकि वह जानवर भी निहायत सीधा था मैं अक्सर उस पर सवार रहता जब तक धूप तेज़ न होती, तब मैं अपनी वालिद: के साथ डोली में सवार करा दिया जाता। तीसरे दिन मुझे याद है कि मेरे उस दोस्त ने मेरे वालिद से रास्ते में कहा कि—

"यूसफ़ख़ां! आप इन विचारे जवानों को क्यों अपने साथ इन्दौर ले जाते हैं, आगे की मंज़िल पर पहुंच कर इन्हें वापस क्यों नहीं कर देते! मैं और मेरे आदमी आप के हिफ़ाज़त के लिये काफ़ी हैं और चूंकि हम और आप हमपेशा हैं हमारी समझ में इस में कोई नुकसान नहीं है कि बाक़ी सफ़र में आप और आप के लड़के बाले हमारे हिफ़ाज़त में चलें।

"मा सिवाय रास्ते का खतरनाक हिस्सा और जंगल जिस्से की हम लोग कल परसों होते आये हैं गुज़र गया और आगे का मुल्क बहुत साफ़ है। ठग और चोरों का खौफ़ फ़कत इन्हीं मुकामों में था सो पीछे छूट गये"।

मेरे वालिद ने कहा—"आप बजा फ़रमाते हैं मैं भी समझता हूं कि इन लड़कों को भी वापिसी मंज़िल सख़ पड़ेगी और अब ये लोग पचास साठ कोस आ भी चुके हैं"।

मंजिल पहुंचने पर मेरे वालिद ने उन साथियों से वापस जाने को कहा इस पर वे सब भी निहायत खुश हुये। अनकरीब दोपहर को वे रवाना हुये और मैंने अपने पुराने दोस्तों और हमजोलियों को अपने खैरवाफ़ीयत का पैग़ाम कहला भेजा। मुझे अब तक याद है कि मैंने अपनी छोटी बहिन के लिये एक पुराना घिसा हुआ रुपया यह कह कर भेज दिया था कि वह अपने तावीजों के साथ बतौर मेरी याददास्त के गले में पहिने रहे। साहब मैंने उस रुपये को फिर पाया मगर अफ़सोस! किस बुरी हालत में।

इतना बयान करते ही अमीरअली कांप उठा, उसके तमाम बदन में सनसनाहट छा गई; कुछ देर ठहर कर उसने कहा कि "साहब बराह मिहरबानगी किसी नौकर को हुक्म दीजिये कि मेरे लिये थोड़ा पानी लावे बहुत बोलने से मुझे प्यास लग गई है"। मैंने कहा नहीं तुम्हें प्यास तो नहीं है पर खैर तुम्हारे लिये पानी मंगाया जाता है।

इतने में नौकर पानी लाया, मगर ज्योंही उसने प्याला लबों से लगायाही था कि फिर दुबारा उसका बदन कांप उठा। वह उठ खड़ा हुआ और कमरे में टहलने लगा, ज्यों ज्यों वह टहलता था उसके पैर की बेड़ियां झनझनातीं थीं। आखिर उसने कहा "साहब यह कमज़ोरी का बायस है। मैं इसे किसी तरह न रोक सका, मुझे हरगिज़ यह ख्याल न था कि मैं अपने बयान के शुरु ही में इस कदर कांप उठूंगा, मगर पुरानी बातों की याददाश्त ने मुझ पर ऐसा असर किया कि मैं घबड़ा गया और मेरी हिम्मत जाती रही। मगर अब वह बात ते हो गई मैं अपना हाल आप को सुनाता हूं"।

मैंने कहा "हां ठीक है, कहो"।

अमीरअली ने कहा कि ज्वानों को गये दोही चार घंटे गुजरे थे कि शाम हो गई, मेरा वह दोस्त मेरे वालिद के पास आकर कहने लगा कि आगे की दोनों मंजिलें बहुत छोटी हैं सो अगर आप की खुशी हो तो हम लोग दोनों मंजिल एकही दिन ते कर डालें, इससे हम लोग इन्दौर के ज़्यादातर नज़दीक भी पहुंच जायंगे; मगर ऐसा करने के लिये हम लोगों को तुलू-आफ़ताब के बहुत पेश्तर डेरा कूच कर देना होगा और डोली के कहार लोग भी इस बात पर राज़ी हो जायंगे क्योंकि इस के एवज़ में उस गांव में पहुंच कर वहां के पटेल से जो मेरा दोस्त है उन्हें एक भेड़ मुफ़्ही दिलवा दूंगा। मेरे वालिद इस बात से नाखुश हुये कि पटेल से मुफ़्में भेड़ ली जाय और बोले कि "जनाब मैं कुछ ऐसा गरीब तो नहीं हूं कि एक भेड़ की भी कीमत न दे सकूं, अगर ये कहार लोग तेज़रौ होंगे तो इनशाअल्ला मंज़िल पर पहुंच कर मैं इन्हें इनाम से खुश करूंगा।

"बहुत अच्छा"—मेरे दोस्त ने कहा "बेहतर है, हम सिपाहियों के पास तो अपने हथियारों के सिवाय और कुछ भी नहीं रहता।"

मेरे वालिद ने कहा—"सच है, मगर आप जानते ही हैं कि मैंने अपने गांव की तमाम मिलकियत फरोख़ कर डाली है और कुल नकद माल अपने साथ सफर की मदद के लिये ले जाता हूं मेरे पास नक़द माल ज़्यादा है।" इतना कह कर मेरे वालिद रुपयों को याद कर निहायत खुश हुये।

मैंने पूछा "क्या आप के पास हज़ार रुपया होगा?" क्योंकि इस के पार भी दौलत हो सकती है यह मुझे ख्याल ही न था।

उन ने कहा "भला इस से ज़्यादा हो तब?"—यह बात तो वहीं खतम हो गई मगर मुझे अब तक याद है कि इतना सुन कर मेरे उस दोस्त ने अपने साथियों की तरफ मतलब-आमेज़ निगाहों से देखा।

आखिरश यह ते पाया कि शब को आधीरात के वक़्त चांद निकलने पर हम लोगों का डेरा कूच होगा।

ठीक वक़्त पर हम लोग जागे और हमारे साथी लोग हुक्के की आग लेकर रवानः हुये। मैं अपनी वालदः के साथ डोली में था; चांद निकल आया मगर

मुझे याद है कि वह ज्यादा रोशन न था और कुछ कूहियां भी पड़ रही थीं इससे हम लोग आहिस्ता २ चलते थे। कई कोस के सफर के बाद कहारों ने यह कहकर डोली रख दी कि कीचड़ और अंधेरे में हमलोग नहीं चल सकते सूरज निकलने पर चलेंगे। मेरे वालिद और उन कहारों से सख़ कहा सुनी हुई और चूंकि मैं अच्छी तरह जागता था और बारिश भी कम होगई थी मैंने डोली से बाहर आने की इल्तिजा की और चाहा कि अपने उस दोस्त के साथ घोड़े पर सवार होऊं । गोकि मेरा वह दोस्त हसब दस्तूर इस मर्तबः राजी न होता था ताहम् जब कहारों को डोली उठाने के लिये सख़ मलामत की गई तो उसने मुझे अपने साथ घोड़े पर सवार करा लिया। मैंने उस से पूछा कि चन्द सिपाही आप के साथ के क्यों गैरहाज़िर हैं। मेरे इस कहने से मेरे वालिद का ख्याल भी इसी तरफ हुआ और उन्होंने भी पूछा कि आप के चन्द सिपाही कहां हैं। उसने लापरवाही से जवाब दिया कि चूंकि हम लोग आहिस्ता २ चलते हैं वे अपनी तेज़रवी से आगे निकल गये हैं और हम सब भी जल्द उन से जा मिलेंगे।

हम लोग और आगे बढ़े आखिरकार एक छोटी नदी के किनारे पहुंचे जिसके पास एक निहायत घना जंगल था। इस नदी में पानी इस क़दर कम था कि इन्सान बआसानी तमाम हल कर पार हो सकता था । इतने में मेरा वह दोस्त घोड़े पर से यह कह कर उतरा कि मैं पानी पीऊंगा। उसने मुझ से कहा कि तुम इस घोड़े पर चले चलो । मैं उसे अपने भरसक अच्छी तरह चलाये जाता था मगर पेश्तर इस के कि मैं नदी के पार होऊं मैंने अपने पीछे एक-बयक चिल्लाहट की आवाज़ सुनी जिससे मालूम हुआ कि कोई लड़ रहा है। मैं डर गया और ज्योंही पीछे फिर कर देखने लगा कि वह आवाज़ कहां से आई थी मैं एक बयक घोड़े के एक तरफ झुक गया और दर्या के सतह में जो पत्थर थे उन पर गिर पड़ा जिससे मेरा सिर फट गया और मैं बेहोश हो गया। देखिये वह निशान अब तक कायम है।

कुछ देर तक मैं योंही पड़ा रहा बादहूं उठ बैठा और देखा कि वे सब लोग जिन्हें मैं समझता था कि आगे बढ़ गये होंगे डोली लूटने में लग रहे हैं;

तब तो मैं अपने और भर चिल्लाने लगा । उन में से एक दौड़ कर मेरे पास आया, यह वही बदसूरत शख्स था जिस का बयान मैं पहले कर चुका हूं उसने मेरे गले में एक रूमाल डाल कर कहा कि "आह ! शैतान के बच्चे तुझे तो हम लोग भूलही गये थे"। अनकरीब था कि वह मुझे मार डाले कि इतने ही में दूसरा शख्स दौड़ता हुआ आया—यह मेरा वही दोस्त था । इसने आते ही गुस्से के साथ उस का हाथ पकड़ कर कहा "खबरदार, इसे मत छूना"। इन दोनों में सख्त झगड़ा बरपा हुआ यहां तक कि दोनों ने अपनी तलवारें खींच लीं । फिर क्या हुआ मुझे कुछ होश नहीं क्योंकि मैं इस कदर डर गया था कि मुझे कुछ भी अपनी होश न रही, मुझे ग़श आ गई ।

कुछ देर बाद किसी ने मेरे मुंह में थोड़ा पानी दिया और मैं अपने होश में आया । निगाह खुलते ही सब से अव्वल मैंने अपने वालिद वालदः अम्मा और कहारों की लाश को देखा जो इधर उधर जमीन पर पड़े थे । मैं नहीं कह सकता कि मुझे उस वक्त क्या २ ख्यालात गुजरे, जो हो मैं एक दम घबड़ा गया । फ़क़त इतना ही याद है कि मैं अपनी मा के लाश पर जा गिरा जिस की शकल बिल्कुल बिगड़ गई थी और फिर बेहोश हो गया । आज पैंतीस बरस गुज़र गये मगर मेरी वालदः की वह खौफ़नाक शकल खास कर उस की आंखें मेरे चश्मों के रूबरू अब तक दिखलाई देती हैं मगर साहब उनके बयान की क्या ज़रूरत है । अफसोस ! उस के गले में फांसी लगा दी गई थी । मेरे वालिद वालदः और तमाम गरोह के लोग उस कमबख्त जगह पर मारे गये । मैंने यह सब हाल कई बरसों के बाद एक पुराने ठग से सुना जिसे मैं आगे चल कर मौके पर बयान करूंगा—

जब मुझे होश आई मैंने अपने तईं फिर उसी दोस्त के पास पाया जिसने मेरी जान बचाई थी । वह मुझे अपने हाथों पर उठाये हुआ था; मैंने देखा कि हम लोग अब सड़क पर नहीं हैं बल्कि एक घने जंगल से जो चारों तरफ फैला था तेज कदमी से चल रहे थे; मगर मेरे सिर में इस शिद्दत से दर्द था कि मैं गर्दन न उठा सकता था, मेरी आंखें निकली आती थीं और मारे दर्द के बेचैन थीं । होश आते ही मुझे सब बातें दुबारा याद आ गईं और मैं फिर

बेहोश हो गया । इसी तरह इस सफ़र में कई मर्तबः मुझे होश होती और फिर ग़श आ जाती थी मगर होश में मुझे इतना ही जान पड़ता था कि सब लोग तेज़ चले जाते हैं, उन की चाल दौड़ने से कम और चलने से तेज़ थी। आखिरकार हम लोग एक मुकाम पर ठहरे, सूरज निकल आया और दिन रौशन हुआ। उन लोगों में से एक ने मुझे घोड़े पर से उतारा और एक दरख़्त के तले ज़मीन पर कपड़ा बिछा कर सुला दिया, कुछ देर बाद मेरा वही दोस्त मेरे पास आया मैं अब अकेला रह गया; मुझे गुमान हुआ कि वह भी मेरे वालिदैन के मारने में बेशक शरीक था, सो लड़कपन के गुस्से में मैंने उसे सख़्त गालियां देनी शुरू कीं और कहा कि मुझे भी मार डाल । उस ने मुझे सब्रो-दिलासा देने की बहुत कोशिश की पर ज्यों ज्यों वह मुझे दिलासा देता था त्यों त्यों मैं उस से अपने मार ही डालने की आर्ज़ू करता था। मेरा दर्द बढ़ता ही जाता था, मेरी गर्दन और आंखें फटी जाती थीं। मैंने अपने भर सक उसे बहुत ही गालियां दीं; मेरे इस चिल्लाने और बकने से वह बदसूरत शख़्स जिस का नाम गनेशा था सख़्त नाराज़ हुआ और गुस्से से मेरी तरफ़ दौड़ा, और मेरे दोस्त से जिस का नाम इस्मायल था बोला—"यह नालायक क्या बरबरा रहा है?—क्या आप भी औरत हो गये हैं? जो इस के गले में कपड़ा डाल कर इसे एक दम चुप नहीं करते? अगर आप डरते हैं तो लाइये मैं इसे खामोश करूं?"—

इतना कह कर वह मेरे पास आया। मैं बेपरवाह था, मैं उसे भी सैकड़ों गालियां देने लगा और मैंने उस पर थूक दिया। उस ने अपनी कमर खोली और मुझे ख़तम कर ही चुका था कि इस्मायल ने फिर दख़ल दिया और मुझे बचा लिया । उन दोनों में फिर दुबारा सख़्त फसाद बरपा हुआ मगर इस्मायल मुझे वहां से उठा कर कुछ दूर एक दूसरे दरख़्त के तले जहां गरोह के चन्द लोग खाना पका रहे थे ले गया । मुझे वहां रख कर उन लोगों के सुपुर्द कर वह तो चला गया। उन लोगों ने मुझे बहुतेरा बोलना चाहा मगर मैं हरगिज़ न बोलता था, मेरे गर्दन और आंखों का दर्द बढ़ने लगा यहां तक कि मैं ज़ार ज़ार रोने लगा। कई घंटे तो मैं इसी तरह पड़ा रहा, आखिर-

बार रोते रोते थक कर सो गया । बक़रीब शाम के मेरी नींद खुली और जब इस्माइल ने मुझे बैठे देखा तो मेरे पास आकर मुझे दिलासा से प्यार करने लगा और कहा कि अब से तुम मेरे लड़के हुये, मैंने तुम्हारे वालिद को हरगिज़ नहीं मारा यह दूसरों का काम है । मुझे याद है कि मैंने उससे कहा कि मेरे गर्दन की कुछ फ़िक्र कीजिये जो बसबब दर्द के बहुत ज़्यादा सूज गया था उस ने उसे देखा और कहा कि खुदा ने तुम्हारी जान बचाई वर्ना चोट निहायत भरपूर व सख़्त लगी थी ।

उस ने मेरी गर्दन पर तेल मला और बाद्‌ज़ां पत्ता गर्म करके बांध दिया जिस से मुझे बहुत राहत हुई क्योंकि मुझे आराम जान पड़ता था । वह मेरे पास बैठा था और दूसरे लोगों में से चन्द शख़्स जो वहां मौजूद थे गाने बजाने और मेरा दिल बहलाने लगे । शाम को मुझे कुछ दूध और चावल खाने को दिया गया मगर सोने के पेश्तर इस्माइल मेरे पास कुछ चीनी का शरबत ले आया और कहा कि इसके पीने से तुम्हें नींद आ जायगी । मैं ख़्याल करता हूं कि उस में अफ़ीम घुली हुई थी क्योंकि दूसरे दिन सुबह तक मुझे कुछ भी होश न थी, सुबह को मैंने अपने तईं घोड़े के पीठ पर उस के बाज़ू में पाया जिस से मालूम हुआ कि हम लोग सफ़र में हैं ।

मैं सफ़र का हाल छोड़ जाता हूं क्योंकि मुझे इसके सिवाय कुछ भी याद नहीं है कि गनेशा हम लोगों के साथ अब न था; इस से मैं निहायत खुश हुआ क्योंकि मैं उससे नफ़रत करता था और महज़ बेज़ार था और उस की शकल मुझे निहायत नापसन्द थी । गोकि बाद्‌ज़ां कई बरसों तक हम लोग बाहम ठगी में शरीक थे मगर मैं हमेश: उस से दिली नफ़रत रखता था जो आख़िर दम तक इसी तरह क़ायम रही । उस गरोह के फ़क़त सात आदमी और इस्माइल बाक़ी रह गये और हम लोग दूर दराज़ की मंज़िलें ते करते हुवे एक गांव में पहुंचे जहां इस्माइल ने कहा कि मेरा मकान है और जहां मैं तुम्हें अपनी बीबी के सुपुर्द करूंगा । वहां पहुंचने पर इस्माइल ने मुझे अपनी नौजवान बीबी के रूबरू यह कह कर पेश किया कि यह मेरे रिश्तेदार का लड़का है जिसे मैंने बहुत दिनों से गोद लिया था अबर बाज़ औक़ा याकर

साथ लेता आया। क़िस्स: कोताह यह कि मैं बदस्तूर घरह के मोद लिया गया और चन्द असें में अपनी सब तकलीफ़ों को भूल गया

दूसरा अध्याय ।

उस वक़्त मेरी उम्र क़रीब पांच बरस के होगी । साहब आप को ताज्जुब मालूम होता होगा कि मैं ऐसी छोटी उम्र में इतनी बातें याद रख सका कि जैसा मैंने बयान किया है। नहीं, जब मैं चन्द साल के लिये दिल्ली में क़ैद था तो अकसर तख़लिये में बैठ अपनी जिन्दगी के वारदातों को याद किया करता और सिलसिलेवार बैठाया करता था—क्योंकि तख़लिये में पुरानी से पुरानी बातें भी एक एक बार ऐसी याद आती हैं गोया कलही गुज़री हुई हैं। मेरी यादृदाश्तने भी मुझे उसवक़्त ज़्यादा मदद दी जब मैंने इन बातों को उसी क़ैदख़ाने में एक पुराने ठग से सुना । उस वक़्त मुझे और भी बातें मालूम हुईं मगर मैंने आप को फ़क़त अपनी यादृदाश्त का हाल सुनाया है। ख़ासकर गनेशा के साथ जो जो बातें हुई थीं वे मुझे अब तक याद हैं क्योंकि उसने मुझे बाज़ा बतलाया कि अगर उस वक़्त मेरे अफ़सर इस्माइल के ख़ौफ़ ने मुझे न रोका होता तो मैं तुम्हारी गालियों से इस क़दर सख़्त नाराज़ हुआ था कि बेशक गुस्से के जोश में तुम्हें मार डालता ।

मगर हां आप अगर उखता न गये हों तो मैं अपना हाल आगे बयान करूं।

मैंने कहा, "नहीं नहीं मुझे ज़्यादातर शौक़ होता जाता है तुम बेशक बयान करो"।

अमीर अली ने कहा, बहुत अच्छा—साहब इस्माइल और उसकी बीबी दोनों मेरी पर्वरिश की निगहबानी बख़ूबी करते थे। मुझे देख कर गांववाले अकसर चौकन्ने होते थे;—इस्मायल को यह शक पैदा हुआ कि मैं उन लोगों से अपना और अपने वालिद वगैरह का हाल कहीं न कह बैठूं इसलिये वह मुझे अपने और अपनी बीबी के निगाह से दमभर अलाहिदा न होने देता था। रफ़्त: रफ़्त: मैं अपना सब हाल भूल गया और कुछ धुंधला सा ख़याल उन बातों का दिल पर बाक़ी रहा यहां तक कि अगर मैं उस वक़्त किसी को क-

पना हाल कहा चाहता तो हरगिज़ उसे समझा न सकता और न वह मेरी इन बेसिलसिले की बातों का हरगिज़ एतबार करता।

इस्मायल जब तक घर पर रहता तब तक इस गांव में बज़ाज़ी की दूकान करता था। वह रोज़ अपनी दूकान पर बैठता और कई तरह के उम्दे उम्दे कपड़े फ़रोख़ करता था मगर यह बात मुझे भी साफ़ ज़ाहिर होती थी कि उस की तबीयत अपने इस काम पर न लगती थी और उसका ख़्याल हमेशा उड़ा रहता था। अक्सर वह महीनों घर से गायब रहता और घर वाले यह न जानते थे कि वह कहां जाता था बस एकबयक वह बहुत कुछ माल असबाब कपड़ा वगैरह लेकर वापस आता और साबिक़ दस्तूर उन की बिक्री अपनी दूकान पर करता था। वह हमेश: मुझ पर मेहरबानगी की निगाह रखता और मैं भी उसे बहुत प्यार करताथा क्योंकि वह मेरे पहिले वालिद के माफ़िक़ मग़रूर वो बदमिज़ाज न था। मेरी नयी वालिद: मुझे हर्गिज़ नाराज़ न करती क्योंकि उसे कोई दूसरा लड़का बाला न था, फ़क़त मैंही एक उस के घर का चिराग था और वह भी अपनी हत्तलमक़दूर मुझे हर तरह खुश रखती; मेरी पोशाक हमेश: साफ़ वो सुथरी रहती और जो कुछ सामान लड़कों के लिये चाहिये सब मेरे लिये मौजूद था। मुझे ख़्याल है कि मेरी उमर अनक़रीब नौ बरस की होगी जब मेरी इस वालदा का इन्तक़ाल बुख़ार से हुआ; उस वक़्त इस्मायल कहीं बाहर गया हुआ था सो उस के वापस आने तक मुझे एक पड़ोसी अपने मकान पर ले गया, साहेब वापस आने और अपनी बीबी का इन्तिक़ाल सुनने और अपना घर वीरान पाने पर जैसी मायूसी इस्मायल को हुई मैं आप से क्या बयान करूं, मैं निहायत छोटा था उसे क्या सब्र दे सकता था मगर वह हर जुमे को अपनी बीबी के क़ब्र को फूलों से आरास्ता करने जाता और ज़ार ज़ार रोता था।

बेचारी मरियम—बेहतर हुआ कि तेरी मौत हो गई अगर तू जीती रहती तो तेरी क्या हालत होती! आज तमाम दुनियां में इस बात की शुहरत वो बदनामी होती कि तू एक मशहूर ठग की बीबी है और वह धब्बा तेरे पाक नाम के दामन पर हमेशा के लिये क़ायम रहता!!

साहेब वह बिचारी इस भेद से हर्गिज़ वाक़िफ़ न थी कि इस्माइल कौन था उस के लिये तो वह एक इज़्ज़तदार रईस था उसे जिस बात की ख़्वाहिश होती उसी दम पूरी होती उस के दिल की ऐसी कोई आरज़ू न थी जिस के लिये उसे आतुर होना पड़ता । साहेब इस्माइल के तौर तरीके ऐसे पोशीदे थे कि वह बेचारी उस के शिकारी मन हर्गिज़ न जान सकती कि मैं एक रोज़गारी ठग की बीबी हूं॥

अब मैं अपनी ज़िन्दगी का चार पांच बरस यों ही छोड़ जाता हूं क्योंकि उन में कोई वारदात क़ाबिल-बयान नहीं है । अपनी बीबी के इन्तक़ाल के चन्दरोज़ बाद इस्माइल ने वह गांव छोड़ कर दूसरे सुरमई नामी गांव में जो उस वक़्त मातहत सरकार सेंधिया था अपनी सकूनत क़ायम किया । मैं एक लईक़ मुल्ला के मकतब में बैठाया गया जहां मैंने फ़ारसी पढ़ना लिखना सीखा ।

जब मैंने होश संभाली मैंने देखा कि इस्माइल के पास बहुत से लोग शब को आया जाया करते थे मुझे अज़ख़ुद यह जानने की ख़्वाहिश हुई कि ये लोग कौन हैं और क्यों यहां जमा होते हैं । एक रोज़ शाम के वक़्त जब उन के आने की ख़बर थी मैं बहाना कर के लेट रहा और ग़ालिब-दस्तूर सोने के लिये उठ गया मगर जब वे सब आकर जमा हुये मैं बड़ी हुशियारी और आहिस्तगी से उठा और जिस कमरे में वे बैठे थे उस के दूसरे कोने पर एक परदे के पीछे लेट कर उन की बातें सुनने लगा । उन के लिये जो खाना तयार किया गया था उसे खा पीकर वे सब पास पास हो बैठे और ऐसी ज़बान में बातें करने लगे जिसे मैं बहुत कम समझता था । यह मुझे एक अजीब बात मालूम हुई क्योंकि मैं हिन्दुस्तानी बोली जानता था और गांव के लड़कों के साथ हिलने मिलने से कुछ गँवारी बोली भी सीख गया था । कुछ देर बाद इस्माइल उठा और जहां मैं लेटा था उसके पास की एक कोठरी में आया मैं उस के आने से बहुत डर गया इस ख़्याल से कि शायद उस ने मुझे देख न लिया हो । वह कोठरी में से एक संदूक ले आया और उसे उन लोगों के बीच में रख कर खोला, जोकि मैं उसे बग़ौर ख़्याल करता था मगर [illegible] मुझे हर्गिज़ न [illegible] सोने चांदी के गहने और अशरफ़ियों की

जड़ियों के सिवाय बहुत बेशक़ीमत जवाहिरात भी थे वे सब बराबर २ हिस्सों में बांट कर रक्खे हुए थे इस्मायल ने एक एक हिस्सा हर एक को दिया और अपने लिये भी एक हिस्सा जिसमें बहुत कुछ माल था रख लिया।

आखिरकार वे हिन्दुस्तानी ज़बान में जिसे मैं समझता था गुफ़्तगू करने लगे। उन में से एक ने जिसकी लंबी दाढ़ी थी और देखने में भी निहायत मुअज़्ज़िज़ था इस्मायल से कहा "कहिये मीरसाहेब अब आपने अमीर के लिये क्या सोचा है। अब वह जवान होचुका और अगर आप उसे हमलोगों में मिलाया चाहते हैं तो यह मौका निहायत उमदा है कि उसे अभी से यह काम सिखाया जाय। अब उसे मकान में रखना निहायत खतरे का मुकाम है। शायद वह हम लोगों का हाल दरयाफ़्त कर ले और पेश्तर इस के कि आप को इस मामले की वाक़फ़ियत हो वह किसी तरफ़ रवाना होजाय।

इस्मायल ने कहा कि उसकी किसी तौर का खौफ़ मत कीजिये वह मुझ से निहायत मुहब्बत रखता है सिवाय इस के मुझे छोड़ इस दुनियां में दूसरा कोई सरपरस्त उसका नहीं है। इसका वालिद भी * * * * साहब इसके बाद इस्मायल फिर उसी ज़बान में बातें करने लगा जिसे मैं न समझता था।

उस दूसरे शख्स ने जिस का नाम हुसैन था जिसे मैं अच्छी तरह जानता था क्योंकि शाहिरा में इस्मायल ने उसे कपड़े की खरीद फ़रोख़ के लिये अपना गुमाश्ता मुक़र्रर किया था कहा, "तो कुछ परवाह नहीं लड़का भी निहायत चुस्त और चालाक जान पड़ता है। यह ठीक नहीं है कि आप उसे इतनी लापरवाही से घूमने फिरने देते हैं इस से चन्दरोज़ में वह बहुत सी बाहरी बातें जान जायगा अगर अभी से साथ उमदगी के यह काम उसे न सिखलाया जाय। सिवाय इस के उसकी उम्र भी इतनी हो चुकी है कि वह हमलोगों का सब तरह से काम दे सक्ता है। बेहतर है कि अगर उसे यह काम सिखाना है तो अभी से उसे अपने इस रोज़गार की तरबीयत दी जाय, यक़ीन रखिये कि जितनी जल्दी वो शुरू करायगा उतना ही ज़ादा उसे चसका पड़ जायगा। मैंने भी एक मर्तब: एक लड़का पाला था सो जब एक मर्तब: उस का हाथ इस काम में लग गया तो वह अपने काम में पूरा शेर हो गया और

रेका मुद्दत: निकला कि हम लोगों में सब से पुराना हाथ भी उस नये हाथ के मुक़ाबिल न ठहरता था" ।

"बेहतर है इस्मायल ने कहा मैं यक़ीन करता हूं कि आप का कहना वाजिब है मैं कह सक्ता हूं कि लड़का होशयार है वह अपनी उम्र पर ज़्यादा मज़बूत और दिलेर है कसरत में कोई भी उस्से मुक़ाबिल नहीं ठहरता जिस में मैंने लड़कपन से उसे र्वंत कराया है । मगर उस का मिज़ाज ऐसा नर्म व सलीम है कि मैं नहीं जानता कि यह हाल मैं उस से कैसे ज़ाहिर करूं । मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि वह हरगिज़ राज़ी न होगा" ।

तीसरे शख़्स ने जिसे मैंने पेश्तर कभी न देखा था कहा "फ़ोह ! यही नर्म दिल लड़के तो हमारे ख़ास मतलब के हैं ये ब आसानी तमाम चाहे जिस तरफ़ लगा लिये जा सक्ते हैं और इन पर ज़ादा इतक़ाद रह सक्ता है । इस बात को एक मर्तब: उसे समझाइये और इस काम में शोहरत और बिहिश्त पाने का यक़ीन दिलाइये । उसे उन हूरों का हाल सुनाइये जिसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाह अलहे वसल्लम ने हमें बख़्शने का वादा किया है, उसे इन्द्र के बिहिश्त का भी हाल सुनाइये आप जानतेही हैं कि ये सब बातें यक़ीनन् हम लोगों को दस्तयाब होंगी पहली बात तो हमें मुसल्मानी मज़हब से दूसरे अपने रोज़गार से हासिल होगी मुझे यक़ीन है कि वह बेशक इसे क़बूल कर लेगा । इस्मा-यल ने कहा कि मैं ख़्याल करता हूं कि आप ने ठीक पहचाना वह छोकड़ा भी उस बेवकूफ़ बुड्ढे मसजिदी मुल्ला के पास फ़ुरसत पाने पर जाया करता है उसने उसका दिमाग़ क़ुरानशरीफ़ की आयतों से इस क़दर बिहिश्त के बारे में भर दिया है कि वह गाहे बगाहे ख़ुद अपने तईं भी भूल जाता है और यही मुक़ाम उसके दिल पर असर लाने का है। मैं इस बारे में उसे समझाऊंगा और इसमें कुछ शक नहीं कि वह हम लोगों में जल्द शरीक हो जायगा ।

हुसैन ने हँस कर कहा "जितना जल्द हो बेहतर है मैं नौजवान के हाथ की कसरत देखना ज़्यादा पसन्द करता हूं—उसकी [illegible] ऐसी भोली जान पड़ती है कि जब उसके हाथ में रूमाल देकर उसे कहा जाता है कि—

"ख़ामोश—उस बुड्ढे ने कहा "फ़र्ज़ करो वह आप लोगों की बातें सुनता

ही ? —आप तो कुछ सादा २ बयान ही करने लग गये—मगर उस ने सुन लिया तो शायद उसको कोई दूसराही ख्याल पैदा हो और वह निकल भागे जैसा कि मैं पेश्तर कह चुका हूं।"

इस्मायल ने कहा "नहीं नहीं इसका मुतलक ख़ौफ़ न कीजिये"—"पर यह तो कहिये कि आप मंज़िलों से थक तो नहीं गये, याद रखिये कल हम लोगों को सफ़र दूर दराज़ दरपेश है और खुदा जानता है कि कुछ मुनाफ़ा गहरा हाथ लगेगा"।

सभोंने कहा 'ठीक है' और उठ खड़े हुये "चलिये आराम करें यहां छित की गर्मी है, मैदान में ज़रा सर्द हवा की बहार देखिये, "इतना कह कर वे सब कमरे के बाहर चले गये।

साहब, आप एतबार मानिये कि उस वक़्त मेरी तबीयत में किस कदर तफ़क्कुर पैदा हुआ। इस्मायल कौन है ? और ये सब कौन हैं? वह क्या बात है जो मुझे जानना या सीखना होगा। मेरी तबीयत चक्कर में थी। उस रात मुझे मुतलक नींद न आई, ज़रा भी पलक न झपकी, मुझे कुछ बुखार सा मालुम होने लगा। मैं कह सकता हूं कि मेरी यही ख़ाहिश हुई कि चाहे जो हो मैं इस्मायल का शरीक होऊं और जानूं कि इस में क्या भेद है। अब तक मैं फ़क़त लड़का समझा जाता और मेरे साथ वैसाही सलूक होता था मगर अब यह बात दूर होने को थी। मैं सांप के मानिन्द अपनी पुरानी केंचुली बदल कर नई रौनकदार शक्ल धरने को था—मैंने उन की गुफ़्तार से इतना तो समझ लिया कि मेरे वालिद कौन थे इस्मायल मेरा वालिद नहीं है और मैं अपनी यादाश्त पर नाहक़ ज़ोर देने लगा कि कुछ भी मुझे ख़्याल हो कि मैं कौन था और क्या हूं मगर मुझे तमाम अंधेरा सा जान पड़ता था। मुझे सिवाय उस बिचारी मरियम के जिसे मैं मां कह कर पुकारता था कुछ भी याद न आता था, इस के पार गो कि मैंने सख़्त कोशिश की कुछ भी ख़्याल ही न जमता था। कई बरसों के बाद जैसा कि मैं आप से बयान कर चुका हूं जब मैं बारह बरस तक कैद था मेरी यादाश्त ने कुछ कुछ मुझे मदद पहुंचाई।

वह शरीफ़ मुल्ला अगरचे मेरी निगाहों में सब से ज़्यादा आलिम भी ज़ाहिर न होता था, तो भी मेरा दिल कुरान की बाबतों से बहुत खुश कर दिया था। वह मुझे बिहिश्त का किस्सा सुनाता, हज़ारों हूरों का हाल और उन की तारीफ़ की मिलिंगी कहता, उनकी खूबसूरती, उनकी याकूत सी आंखें, मोतियों से दांत, लाल से होंठ; और मुश्क सी उन के बदन की खुशबू, जवाहिरात के महल, हमेशः की ज़िन्दगी या नौजवानी के ज़िक्र करता तो मुझे यकीन होता कि ये सब ऐश मुझे बेशक हासिल होंगे। इन बातों से मुझे ज़्यादः रग़बत होती थी, और जब ये सब बातें मैं इस्माइल को सुनाता तो वह भी मेरे मानिन्द निहायत खुश होता था और अकसर अफ़सोस ज़ाहिर करता कि मैंने अपनी बदनसीबी से कुरान शरीफ़ को नहीं पढ़ा वरनः मैं भी इन सब उमदी उमदी बातों को जानता—इतने पर भी हुसैन ने उस मुल्ला को बेवकूफ़ कहा था; मुझे उनकी गुफ़्तगू से ख़याल हुआ कि इन का कोई इस से भी ज़्यादःतर मोअज़िज़ रोज़गार होगा, इन का हाल सब मुसलमानों से भी बढ़ कर मालूम पड़ता है।

मुझे इस बात के जानने की बड़ी ही ख़्वाहिश हुई कि वह कौन सा इल्म है। आख़िरकार मैंने यह विचारा कि अगर इस्माइल इस भेद को मुझे न बतलावेगा तो मैं खुद बख़ुद उस से इस बात का ज़िक्र छेड़ूंगा।

साहेब मैं पेश्तर कह चुका हूं कि उस रात मेरी आंख मुतलक न झपकी जब मैं सुबह को उठा मैंने देखा कि इस्माइल और वे सब चले गये। चन्द रोज़ तक वह लौट कर न आया। यह कोई गैर मामूली बात न थी मगर उस की हरकतें अब मेरी निगाह में कुछ छिपी सी खटकती थीं और उस का अकसर गुम होना उसके असली पेशे पर चाहे जो कुछ भी रोशनी देवे मगर मैंने ख़याल किया कि वह फ़कत बजाज़ ही नहीं है, इस तरीक पेशे में ऐसी कोई बात न थी कि हुसैन की उम्मेदों को जो उसने कहा था पूरी करे। कोई बात बेशक इस के पार है जो मैं ख़याल नहीं कर सकता। मैं इस का भेद जानने के लिये उस शरीफ़ मुल्ला के पास गया। मुल्ला ने जिस का नाम वलीमुल्ला था बड़ी मेहरबानी और मुहब्बत से मुझे अपनी पाक बेठाका मगर मेरी ख़ातिर

देख कर कहा कि क्या तुम्हारी तबीयत कुछ अलील है तुम्हारे चेहरे से कुछ तफक्कुर झलकता है गोया बुखार का असर हो। मैंने कहा जी हां मेरे सिर में कुछ दर्द था मगर अब कुछ आराम है और जल्द बेहतर हो जायगी। मैंने नमाज़ पढ़ी और बादअ़ां बैठ कर उस से इलतिजा की बराय मेहरबानी कुरान शरीफ़ खोल कर मुझे उन आयतों को जिन्हें मैं बहुत चाहता हूं फिर से समझाइये। उस ज़ईफ़ शख्स ने अपना चश्मा लगाया और इधर उधर देख भाल आयत दर आयत अरबी में पढ़ पढ़ कर मुझे उनका मतलब हिन्दुस्तानी ज़बान में समझाने लगा। ये वे आयतें थीं जो मैंने अक्सर सुनी थीं, बाद उसके खतम करने के मैंने बड़ी आर्ज़ू से पूछा कि अगर कोई और हिस्सा भी बाकी हो तो बराह इनायत सुनाइये।

उस ने कहा मेरे फरज़न्द मैंने तुम से कोई बात पोशीद: नहीं रक्खी है। बेशक मेरा इल्म इस पाक कुरान शरीफ के बारे में महदूद है मगर अफ़सोस अगर तुम ने मेरे उस्ताद मरहूम मग़फूर की बनाई शरह देखी या सुनी होती तो मालूम पड़ता कि उन्हें कैसा पूरा इल्म था यहां तक के बाज़ बाज़ की आयतों पर जिन का मतलब बेइलहाम वालों से महफूज़ है उन्हों ने इस कदर शरहें लिखी हैं कि उनकी एक अलहिदा किताब तयार है फ़कत इतना ही नहीं मगर बाज़ बाज़ आयतों के हर एक लफ्ज़ व हरूफ पर भी शरह लिखी है। मगर अफसोस वे जाते रहे और अब बिहिश्त के एश अश्रत का हज़ उठा रहे हैं जिस का हाल मैं तुम्हें सुना चुका हूं। मैं इतना ही कर सकता हूं कि इसे तुम को बार बार पढ़ कर सुनाऊं जब तक कि वे हिस्से जो तुम्हें बहुत प्यारे मालूम होते हैं अरज़बान न हो जावें और वेही गोया इस किताब के लुब्बोलोबाब हैं।

मैंने कहा "जी हां ठीक है मगर जो कुछ कि आप ने बयान किया क्या इसके अलावा आप ने अपनी तालब्ब कोई और बात नहीं सुनी?—आप बेशक मुझ से कुछ छिपाते हैं जिसे आप ब सबब मेरी कमसीनी के बयान करते चौंक जाते हैं"।

"नहीं नहीं" उस ज़ईफ़ ने कहा—"यह सही है कि हमारे मज़हब के

चंद शौक मसलन् सूफी वगैरः ने जिन्हें खुदा यारत करे, मज़हब वाहि य-
ताहि कई बातें जोड़ दी हैं जो सीधे सादे लोगों को जाल में फंसा लेती हैं,
मगर उन पर एतकाद करने वाले दोज़ख को जाते हैं; मैं समझता हूं कि
गोकि तुम कमसिन हो तो भी तुम्हारा एतबार इस कदर जम गया है कि
अब तुम्हें कोई गुमराह नहीं कर सकता" ।

मैंने कहा कि "मैं आप की मेहरबानगी का शुक्र अदा करता हूं, मुझे कोई क्या गुमराह करेगा, मेरा यह सवाल फ़कत इसी गर्ज़ से था कि शायद मुझे और कुछ सीखना बाकी रह गया हो"—मैंने देखा कि या तो वह आगे जानता ही नहीं, या जानबूझ कर मुझे नहीं बतलाता, सो मैंने पूछा "किब्लः यह तो बतलाइये कि मैं कौन सा रोज़गार करूं जिसमें आप की तालीम का उमदा असर हमेशा मुझ पर कायम रहे" ।

उस ने जवाब दिया कि 'तुम मुल्ला हो जाओ, पहिले तो तुम्हें सख़्त मेहनत पढ़ने के लिये करना होगा मगर कुछ रोज़ बाद यह दिक्कत आपही जाती रहेगी और इस बात पर एतकाद रक्खो कि कोई भी फ़न या रोज़गार ऐसा नहीं है जो खुदा को मुल्लापन के बनिस्बत ज़्यादातर पसन्द हो। मैं तुम्हें अरबी ज़बान की इब्तिदायी बातें सिखा दूंगा और तुम्हारे वालिद भी जब तुम्हारा ध्यान इधर झुका देखेंगे हरगिज़ रोक टोक न करेंगे । बल्कि मैं उमेद करता हूं कि शायद वे तुम्हारी तालीम को जिसे मैं शुरू करूंगा पुख़्ता करने के लिये तुम्हें दिल्ली भेज देंगे" ।

मैंने कहा "बहुत अच्छा मैं इसे गौर कर के आप से कहूंगा" मगर मुल्ला होने की तबीयत मेरी हरगिज़ न थी। यह वाकफ़ीयत तो मुझे हो ही चुकी थी कि अजीज़ुल्ला निहायत ग़रीब था और इधर उधर से मांग जांच कर ब मुश्किल तमाम अपना दिन काटता था। सिवाय इस के इस्माइल मुल्ला न था और न हुसेन था उसके और साथी मुल्ला का काम करते थे, मैंने ख्याल किया कि मेरी तबीयत को तभी चैन पड़ेगा जब मैं उन का साथी बन जूंगा वे चाहे जो हों मुझे उन का हमपेशा होना पसन्द था। इसके बाद फिर मैं उस मुल्ला के पास कभी न गया। जो कुछ थोड़ा बहुत इल्म का ख़ज़ाना उसके पास था

मैंने पा लिया था सो अगर मैं एक मर्तबः भी अपनी ख़्वाहिश उस के साम्हने अपने आइन्दे रोज़गार की ज़ाहिर करता तो वह अपनी बात मुल्ला बनने की कायम रखता और मुझ से बार बार इसी पर बहस करता। चूंकि मुझे मुल्ला होना निहायत नापसन्द था मैंने ख्याल किया कि अब उस से दूर ही रहना बेहतर होगा।

खुदा करता कि मैं मुल्ला होगया होता! कोई भी दूसरा काम मेरी इस हाल की नौबत से बेहतर होता, मै गुमान करता हूं कि मेरी यह नौबत हमेशा योंही कायम रहेगी। मगर यह मेरी क़िसमत है और खुदा की कारवाई पर मुझे भुनभुनाना न चाहिये। अगर ऐसा लिखा न होता तो क्या मेरे वालिद मारे जाते? अगर यह क़िसमत का लिखा न होता तो क्या मैं कभी ठग होता? हरगिज़ नहीं, कभी नहीं क़िसमत को कौन रोक सकता है? होनी को कौन टाल सकता है? लेकिन साहब अगर आप बरसों मुझे ईमानदार पावें तो क्या मेरी रेहाई और मेरे खाने पीने का बन्दोबस्त नहीं करदेंगे॥

मैंने कहा "हरगिज़ नहीं तुम ठग लोग इस काबिल नहीं हो कि दुनिया में तुम्हारी आज़ादी की जाय, पहिले ही शक्स के देखने पर तुम्हारा हाथ खुजलाने लगेगा उस को फांसी लगाने के लिये खुर्क होने लगेगी। और बहुत जल्द यह बात सुनने में आवेगी के अमीरअली जमादार पचास साठ ठगों को लेकर घूम रहा है और तुम्हारी गिरफ़तारी के लिये हमें दुबारा तरद्दुद करना पड़ेगा खुदा हरगिज़ ऐसा न करावे,,॥

अमीर अली ने हंस कर कहा "मैं यकीन करता हूं कि आप का कहना सही है गोकि गाहे बगाहे मुझे अपने किये पर अफ़सोस होता है मगर मौका हाथ से निकल जाने पर मुझे ज्यादातर अफ़सोस होगा—फिर आप जानते ही हैं कि मैं गुड़ खाचुका हूं और अब बदल नहीं सकता। मैं जैसा हूं वैसा ही बेहतर हूं क्योंकि अगर फिर आप मुझे गिरफ़्तार करेंगे तो शायद फांसी लटका देंगे।"

मैंने कहा इस्में क्या शक है—मगर तुम अपना हाल बयान करते चलो अगर इस तरह भटकाते रहोगे तो तुम अपने ख्याल का सिलसिला भूल जाओगे।

अमीरअली ने कहा साहब इस तरह बमुश्किलतमाम एक महीना गुज़रा और इस्मायल हुसैन के साथ लौट कर घर आया। इस्मायल ने जिसे मैं वालिद कहता था देखा कि मेरी शक्ल तबदील है इस का बायस पूछने पर मैने वही जवाब दिया जो मैने मुल्ला को कहा था और इस से उस की तसकीन होगई। मगर क्या मेरी तस्कीन हुई? नहीं नहीं हरगिज़ नहीं, मेरी तबीयत उस बात को जानने के लिये घबड़ा रही थी। शब को मुझे नींद न आती थी और रातभर पड़ा २ ख्याली घोड़े दौड़ाया करता मगर मंज़िल मक़सूद को न पहुंचता था। कभी तो जी में आता कि वालिद को छोड़ कर भाग जाऊं और अपनी तक़दीर आज़माऊं, यहां तक कि एक रोज़ थोड़े बहुत कपड़ों की गठरी बांध और कुछ रुपया पैसा जो मेरे पास था लेकर तयार था कि आज रात को शहर छोड़कर चला जाऊं जो होगा देखा जायगा, मगर जब वह वक़्त आया मुझे मुसाफ़िरत की तनहाई का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुआ कि मेरा इरादा फ़िस्ख़ हो गया और बाहर निकलने से बाज़ आया। मैने इस उकदे को हल करने का काम वक़्त पर छोड़ दिया और यह इरादा किया कि आइन्दे को अपने वालिद और उस के साथियों पर ज़्यादा हुशियारी से निगाह रक्खूंगा। कितनी बातें मैंने ऐसी सोच रक्खी थी कि मौका पाकर उन्हें अपने वालिद से पूछूंगा मगर जब वक़्त आता तो मेरी हिम्मत न पड़ती। कुछ इस वजह से नहीं कि मैं बुज़दिल था बलकि मैं निहायत दिलेर था—न जाने वह क्या ख्याल था कि मेरी तबीयत उस अजीब बात के सुनने के लिये बड़ी रग़बत करती थी, मैं नहीं कह सकता कि मेरी तबीयत क्यों ऐसी होगई मगर हक़ीक़त में वैसी ही थी।

एक दिन शाम के वक़्त इस्मायल ने मुझे अपने कमरे में जहां वह सोता था बुला भेजा। ज्योंही मैने चौखट पर पैर रक्खा मेरा कलेजा इस ख्याल से कि अब मेरी किस्मत में क्या है ज़ोर से धड़कने लगा। मैने देखा कि इस्मायल की तबीयत मुतफ़िकर है, उस ने मुझे कहा कि बैठ जाओ और मैं बैठ कर उस की तरफ़ एक टक देखने लगा। वह भी बहुत देर तक मेरी तरफ़ चुपचाप देखता रहा। उस कमरे में फ़क़त एक छोटा सा तेल का चिराग़

एक आले में जल रहा था जिस से थोड़ी सी रोशनी जान पड़ती थी। इस से मेरी तबीयत का ख्याल और भी अंदरही अंदर ज्यादातर खौफ़ से भरता गया। मेरा दम घुटने लगा और न रहसका मैं उठ खड़ा हुआ और उस के कदमों पर गिर के फूट २ रोने लगा॥

उसने मुझे प्यार और मेहरबानी से कहा 'क्यों मेरे फ़र्जन्द अमीर! यह क्या बात है? तुझे क्या तकलीफ है! क्या किसी माहरू ने तेरे दिल में घर किया है या मेरे बाहर जाने पर तुझे किसी बात की दिक्कत हुई या कोई मुश्किल दरपेश आई? मुझ से कहता क्यों नहीं? तुम जानते ही हो कि इस दुनियां में तुम्हारे वालिदसे बढ़ कर तुम्हे दूसरा चाहने वाला नहीं। अफ़सोस कि तुम्हारी वालिदा भी इस वक्त नहीं है।'

जब मुझे कुछ बोलने की ताक़त हुई मैंने डरते २ वह सब हाल जो मैंने उस दिन रात को उन सबों से सुना था कह सुनाया। जब मैं सब बयान कर चुका तो उठ खड़ा हुआ मेरा दिल धड़कने लगा। मैंने हाथ जोड़ कर कहा "अब्बा यह मेरी सख़ ग़ल्ती है मगर लड़कपन की खसलत ने मुझ पर अपना असर ग़ालिब करलिया मैं नहीं जानता कि मेरे कुल ख्यालात क्यों बदल गये हैं। अब मैं लड़का नहीं हूं मैं सब कुछ करसक्ता हूं और मेरी यही अर्ज़ है कि आप एक मर्तबः मुझे किसी काम पर आजमा कर देखिये"। इतना कह कर मैं अपने दोनों हाथ बगल में देकर चुपचाप खड़ा होगया। मेरे इस कहने से उस के दिल पर अजीब असर पैदा हुआ, गोकि रोशनी बहुत कम थी पर ताहम मैंने उस के चेहरे की हरकतों से मालुम करलिया कि वह किसी बड़े सोच में पड़ा था। आखिरकार वह बोला। जब तक वह चुप था मैं बड़े अशपंज में गिरफ़्तार था उस ने कहा कि मेरे फ़रज़न्द! जिस क़दर मैं जानता था उस से ज्यादा आगाही तुम्हें होचुकी है अब मेरी भी यही ख़ाहिश है कि तुम मेरेही मुवाफ़िक़ हो जाओ और जिस क़दर वाक़फ़ियत मुझे तुम्हारी चाल चलन से है उस से मुझे गुमान होता है कि तुम बहुत कुछ काम करसकोगे।

मैंने जोश में आकर कहा कि आप मेरा एतक़ाद कीजिए मुझ पर भ-

रीखा रखिए और आप को कभी इस के लिए अफ़सोस करना न होगा" ।

उसने कहा मैं तुम्हारा एतक़ाद करता हूं सो अब जो कुछ मैं कहता हूं उसे ग़ौर से सुनो क्योंकि इसी पर तुम्हारी आइन्दे की ज़िन्दगी मुनहसर है। जब तुम्हें एक मर्तबः इस का सब हाल मालूम होगया तो तुम्हारा तमाम शुबहा दूर हो जायगा। फ़क़त तुम्हें एक बात आजमाइश के तौर करनी होगी उस में तुम्हारी हिम्मत देखी जायगी, कहो तुम्हारी हिम्मत पड़ती है?

मैंने कहा जी हां एक मर्तबः मेरा इम्तिहान तो लीजिये! कुछ देर तक तो वुह इसी ख्याल के गोते में था और तब बोला—"अच्छा आज तो नहीं मगर मैं क़सम खा कर कहता हूं कि 'आज के तीसरे दिन मैं तुम से कोई बात पोशीदा न रक्खूंगा॥

मैं मायूस हो गया पर तो भी मुझे उम्मेद क़ायम थी, कुछ देर बाद उस ने मुझे सोने के लिये छुट्टी दी।

तीसरे दिन इस्मायल ने अपना वादा पूरा किया—मगर साहब मेरी ज़बान को ताक़त नहीं है कि किसी तरह आप से उस असर का बयान कर-सकूं जो उस वक़्त मेरे दिल पर हुआ। मैं इसी लिये हिचकता हूं कि उसने पहिले अपनी ज़िन्दगी का मुख़सर हाल मुझे सुनाया, उस के बयान करने से अभी मेरा हाल रह जायगा मगर आप उसे निहायत पसन्द करेंगे और आप को बड़ा ताज्जुब होगा।

मैंने कहा इस में कोई शक नहीं अमीरअली! मगर जब तुम अपना अहवाल ख़तम करचुको तो बादज़ां वह भी बयान करना। उस ने कहा साहब आप का कहना सही है अभी तो मैं उस के आख़िरी लफ़ज़ों के सिवाय सब छोड़ जाता हूं। इस आख़िरी बयान ने मुझ पर ऐसा असर किया कि मुझे दुनियां से एकदम नफ़रत हो गई और यही एतक़ाद जम गया कि इस ज़माने में ठगी के सिवाय दूसरा कोई भी ऐसा रोज़गार नहीं है कि जिस में सच्चे सुख और ईमान की उम्मेद हो। उन्हें मैं आगे बयान करता हूं; ये मेरे दिल पर भरपूर नक़्श हो गये थे और अब तक उन का असर क़ायम है।

"यहां तक मेरे फर्जन्द मैंने अपने जिन्दगी का हाल तुम्हारी वाकफीयत के लिये बयान किया, अब मुझे कुछ और कहना बाकी नहीं है। अब इसके कहने की कोई जरूरत नहीं है कि मैं ठग हूं यानी उस मुअज्जिज़ फिर्के का 'अहमाद' हूं कि जिसे अल्लाह ने अपने खास काम के लिये बहुत पुराने ज़माने से चन्द चुनिन्दे लोगों को पसन्द कर लिया था। इस फिर्के में हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई के मानिन्द मिल कर काम करते हैं, बेइमानी तो इनमें नाम निशान को भी नहीं होती और यही एक पक्का सुबूत है कि हमारा यह रोजगार अल्लाह ताला की बरकत और हुक्म से कायम है। चाहे जहां तलाश कर लो इस दुनिया के पर्दे पर सिवाय हम लोगों में सच्चा ईमान कहीं भी नहीं पाया जाता। मैंने तो इस जहान में ईमानदारी कहीं भी न पाई। यहां तो एक परोसी अपने दूसरे हमसाये को हमेशा धोखा देने और उसे नीचा दिखाने की कोशिश में लगा रहता है, सो मैंने इसकी संगदिली को तर्क कर अपनी सचाई को इख्तियार किया है जिसे ख्याल करने से मेरी रूह तरो ताजा हो जाती है। हम लोगों में छोटे बड़े हर एक के दिल को एकही सा जोश उभाड़े रहता है। चाहे जहां चले जावें हरजा बिरादराना सलूक होता है और गोकि मुख़्तलिफ हिस्सों में किसी कदर मुख़्तलिफ़ तौर तरीके हैं ताहम सबों के दिल एकही हैं और सब दिलोजान से ठगी के खास गर्ज और मकसद को अंजाम देते हैं। हम चाहे जहां चले जांय हमारे लिये सब घर खुले हैं और सब कौमों में हमारी खातिरदारी मौजूद है ख्वाह हम हिन्दुस्तान के ठग उनके ज़बान से मुतलक वाकिफ़ न हों ताहम शिनाख़ के निशानात हमारे और उनके एकही हैं, जब चाहे तब तुम उनसे मिल कर इस बात का तजरबा कर लो जैसे मैने खुद किया था। क्या ये बातें बगैर खुदा के मदद के हो सकती हैं? मकासिद इनसानी ऐसे मुख़्तलिफ़ और हमारे मुल्क की हालत ऐसी खराब होगई है कि मैं यकीनन् कह सकता हूं कि बगैर उस परवर्दिगार की मर्जी के ऐसी खुशअखलाकी किसी फिर्के या कौम में नहीं हो सकती। पहिले पहिल तो इस कार के करने में तुम्हें कुछ नागवारी होगी मगर यह दिक्कत जलद रफा हो जायगी क्योंकि जो उमदा मु-

मर्तबिजा हम लोगों को हासिल होता है वह दम भर भी उसके दस्तयाबी के वसीले को ख्याल में हरगिज़ नहीं आने देता। सिवाय इसके यह किस्मत है, उस पाक अल्लाह ताला की मर्ज़ी है। और इसे कौन टाल सकता है? मगर वह हमें इस कार में लगाता है तो वह साथही हमें मज़बूती और दिलेरी भी देता है वह ऐसी हिम्मत बख्शता है जिसे कोई मुश्किल नहीं दबा सकती और ऐसी सर्गर्मी अता करता है कि जो अपने मक़सद के वसूल में हरगिज़ नाकामयाब नहीं होती। मेरे फर्जन्द! मैं तुम्हें यही बनाया चाहता हूं। मेरी इनायत से तुम इस कार को ऊचे दर्जे से शुरू करोगे जिसे दूसरे लोग कई बरस सर्फ़ करने पर भी नहीं हासिल कर सकते। तुम्हें किसी बात की हाजत कभी न होगी क्योंकि मेरी तमाम दौलत तुम्हारी है। मज़बूत हो, हिम्मत रक्खो, चालाक बनो और ईमानदार रहो—बस इसके सिवाय तुम्हे किसी बात की जरूरत नहीं है। उस ठग के लिये जो हमारे भाई चारे में इज्जत वो हुरमत रखता है और कामयाबी के साथ ऊचे दर्जे को पहुंचता है सब से भारी सिफ़ते येही हैं मैं अब उसी दिन की इन्तिज़ारी खींच रहा हूं कि जब मैं तुम्हें तुम्हारे गरोह का सरदार देखूं और इस शुहरत को सुन कर आसूदा होऊं कि इस मायल के बहादुर और दिलेर फर्ज़न्द अमीरअली ने दुनियां में अव्वल नाम पैदा किया। बादजां मैं अपना बाकी का दिन आराम से काटूं मगर तब तक मैं तुम्हारा सरपरस्त हूं और बराबर तालीम देता रहूंगा।

तीसरा अध्याय।

मैने कहा "मेरे वालिद आप को ज्यादा कहने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैं आप का हूं आप की जो मर्ज़ी हो मुझे कीजिये। आप से इस तवारीख सु-नने के बहुत पेश्तर, मैने आप को हुसैन और दूसरों से अपने बारे में बातें करते सुना था जिसे मैं निहायत मुतफिकर था। मुझे इस बात का खौफ था कि शायद आप मुझे काबिल एतबार नहीं समझते थे यह मेरे दिल पर एक

बोझ सा मालुम पड़ता था। यही मेरे रंज और सुस्ती का सबब था जो आप ने मुझ से एक मर्तबः पूछा था मैं खुद उस मौके की तालाश में था कि जब मैं अपना दिल आप को खोल कर दिखलाऊं और आप के साथ मिलने की इल्तिजा करूं। अब मैं लड़का नहीं हूं, आप की तवारीख से मेरे दिल में बहुतेरे ख्याल पैदा हुए हैं जिन्हें मैं इस वक्त सिलसिलेवार बयान नहीं कर सकता मगर मैं आप के मानिन्द नाम पैदा करने की ख्वाहिश रखता हूं और मेरी तबीयत उसी कार में शरीक हुआ चाहती है जिसमें आप बयान करते हैं कि सच्चा ईमान और बिरादराना बर्ताव होता है। अभी तक मैंने इस द-रोगामिज़ दुनिया को कुछ नहीं देखा है मगर जो कुछ आप ने बयान किया उसके सुनने से मेरी तबीयत ऐसे रोज़गार करने की हरगिज़ नहीं होती जि-सका कुछ भी इलाका इस बद्ज़ात दुनिया से हो। आपके सिवाय दूसरों से भी मैने यही सुना है कि ज़माना निहायत खराब और बेदिल है, मुझे मा-लुम होता है कि गोया अल्लाहतालाने मुझे नाम पैदा करने के लिये चुन लि-या है, यह बात फ़कत आपके मुबारक कदम की रहनुमाई से हासिल हो सकती है; सो आप मुझे जिधर ले चलेंगे मैं उधरही राज़ी और खुशहूं। आपके सिवाय मेरा कोई दोस्त नहीं है और न मेरा इस गांवभर में कोई दूसरा म-ददगार है क्योंकि जब मैं देखता हूं कि वे लोग अपने वालिदही का रोज़गार जो मेरी निगाह में बहुत हलका जचता है करते हैं तो मेरी तबीयत उनसे हट जाती है और मैं उनसे अलग रहता हूं। सिर्फ यही जहफ़ मुल्ला मेरा एक दोस्त है को मुझे अपनेही माफ़िक मुल्ला बनाया चाहता है और मेरा रात दिन कुरान पढ़ने में ज़ाया कराया चाहता था। गोकि उसका रोज़गार पाक है मगर उससे तबीयत को जोश नहीं आता इसलिये मेरा जी उसमे नहीं ल-गता क्योंकि अपने उस प्यास के बुझाने की मुझे कोई उम्मेद उसमे नहीं दि-खलाई देती जो मेरे अंदर बल रही है। मेरी ख्वाहिश सिपाही होने और सरकार सेंधिया के फौज़ में भरती होकर काफ़िर फिरंगियों से लड़ने की थी, मगर अब यह ख्याल जाता रहा, अब मै ठग के सिवाय कुछ नहीं बना चा-हता, मेरी यही ख्वाहिश है कि मैं इस दुनिया मे आपही का काम करूं मैं

आपको हरगिज़ नाखुश न करूंगा, मेरे नाम पैदा करने के शौक को मौत के सिवाय कोई नहीं दबा सकता"

इस्मायल ने बड़ी मोहब्बत से कहा खुदा तुम्हारे दुश्मनों को मौत दे। हमारे इस कालिब के फ़कत तुम्हीं एक सब्र की जगह हो मुझे इस दुनिया में सिवाय तुम्हारी तरक्की और तरबीयत के और कोई खुशी या फिक्र नही है। मेरे फर्ज़न्द! मुझे पूरी उम्मेद है कि तुम मुझे मायूस न करोगे। जो आसूदगी और आराम मुझे खुदाने बख्शा है वह तो तुम देखतेही हो मगर मेरे इख्तियार का हाल तुम्हें कुछ नहीं मालूम है। हिन्दुस्तान के इस हिस्से में जितने ठग हैं सब मेरा हुक्म मानते और सब मेरे ताबे हैं एक हफ़्ते पेश्तर इत्तिलाही देने से हज़ार आदमी की फौज मेरी फर्माबर्दारी के लिये जमा हो सकती है, मैं जो हुक्म दूं वे सब मानने को तयार हैं। कुछ रोज़ बाद दसहरे के तेहवार पर इसका हाल सब तुम्हें मालुम हो जायगा। हम सब लोग, खास कर वे जो नये सालके खुलने पर रस्म करेंगे एकट्ठे होंगे। अबकी मर्तब और बरसों के बनिस्बत ज्यादा तैयारी होगी क्योंकि फिरंगियों के साथ होलकर और सेंधिया के जंग होनेसे जो गड़ बड़ मचा है उसमे हम लोगों को ज्यादा फायदा हाथ लगेगा। इस मौसिममे हम लोगों को बहुत काम रहैगा और हमारे लोग भी बहुत दिनोंतक बेकार बैठे रहने से घबड़ाकर अपना वक़्त कारमे लाया चाहते हैं। मैं तुम्हें थिउपुर को जहां हम सब लोगों के जमा होने की सलाह पक्की हुई है ले चलूंगा, क्योंकि वहां का ज़िमीदार हमारा दोस्त है और हर तरह से हमारी मदद रखता है। मैं तुम्हें वहां अपने साथियों से मुलाकात कराऊंगा और तुम हस्बदस्तूर हम लोगों के ठग बनाये जाओगे।"

साहब, इस तरह हम लोगों की बात चीत खतम हुई; रात तो उसी के बयान में गुज़श्त हो गई में उठकर आराम करने गया मगर अब मैं वह अमीरअली न था मेरे ख्यालात बिलकुल तबदील हो गये थे। जब मैं सुबह को उठा मैंने देखा कि मेरी पुरानी दिली कूवत और ताकत लौट आई, कहां तो मैं कुछ दिन पेश्तर हम्मकज़दों के मानिन्द इधर उधर आवारा घूमता फिरता था कहां अब मैंने अपनी गर्दन उठाई और सीना उभाड़ा और मर्द के माफ़िक उठ खड़ा

हुआ। यह सही है कि मैं हनोज़ लड़का था, मेरी उमर अनक़रीब १८ बरस के होगी मगर मैंने इसका मुतलक ख्याल न किया, मैंने सोचा कुछ रोज बाद इन्शा अल्ला मैं कुछ न कुछ हो जाऊंगा। साहब, अपने उस वक्त के जोश को सबूत करने के लिये मैं आपको एक छोटा सा हाल सुनाता हूं। मैं उस काम में इसके पेश्तर शरीक होता मगर ऐसे दिलेरी और हिम्मत का काम जो मैंने उस वक्त किया कभी ख्वाब और ख्याल में न कर सक्ता खास कर यह बहादुरी का काम मैंने उन लोगों के रूबरू किया था जो रोज़गारन सिपाही बाना रखते थे मगर जो खतरे के ऐन मुकाम और मौके पर पीछे हट गये।

अपने वालिद से बात चीत के दो तीन दिन बाद ऐसा हुआ कि हमारे गांव के पास जो छोटा सा जंगल पड़ता था उस में एक शेरनी मै अपने बच्चे के कहीं से आ निकली, पहिले दिन दिखलाई पड़ते ही उसने एक चरवाहे को मारा। दूसरे दिन एक दूसरे शख्स को जो उसकी लाश के तलाश में गया था फाड़ खाया और तीसरे दिन उसने गांव के पटेल को जिस की सब लोग बहुत इज्ज़त करते थे सख़ ज़खमी किया जिस से वह रात ही को मर गया। गांव वालों का एक मजमा एक मुकाम पर जमा हुआ और यह सलाह ठहरी कि गांव के तमाम चुस्त व चालाक लोग एक गरोह बांध कर चलें और उस जानवर पर उसके मांद में हमला करें। दूसरे दिन हम लोग सूरज निकलने के पेश्तर एकट्ठे हुये। उन में एक शख्स जात का पठान था जिसकी बड़ी २ गलमोछें और लम्बी दाढ़ी थी उस ने खुद ही यह बात कही कि मैं तुम लोगों के आगे चलूंगा। दरहकीकत व इस कदर हथियारों से लदा था कि बमुश्किल तमाम कुशादगी से हिल सक्ता था। दो तलवारें तो उस के कमरबन्द में थी जिसमें और भी कई किस्म के छोटे बड़े खुखड़े वगैरः लटकते थे, एक लंबी सीधी दोधारी तलवार उसके बांये कंधे पर लटकती थी जिस की नोक ज़मीन से अनकरीब छू गई थी। उस के पीठ पर एक ढाल थी और दहिने हाथ में कड़ाबीन और तोड़ा था। हम लोगों के पहुंचते ही उसने मेरे वालिद से कहा

"सलामवालेकुम् इस्मायल साहब क्या आप जैसे सीधे सादे लोग भी हमारे साथ हैं और साहबजादा भी—?"।

मेरे वालिद ने जवाब दिया "हां खां साहब ऐसे ज़रूरत के वक़ में यह हर एक भले आदमी का फ़र्ज़ है कि वह अपने भरसक कोशिश करे; कौन जानता है कि वह जानवर न मारा जाय बल्कि इस के एवज़ में कोई दूसरा ही शख्स उस का खुराक हो जावे"।

खां ने अपनी मोछें उमेठ और अपने बदन को देख कर कहा "इनशा अल्ला हम लोगों का पक्का इरादा है कि आज उसे जरूर मारना; कितने ही शेर इस के पेश्तर इस नेक बन्दूक के निशाने से गिर चुके हैं यह क्या गीदी है जो निकल जायगा। दिक्कत इतनी ही है कि वह नालायक हम लोगों के मुकाबिल हरगिज़ न खड़ा होगा ताकि हम लोग यह सुबूत कर सकें कि हम मर्द हैं, कोई गीदी नहीं।"

मेरे वालिद ने कहा कि "इस आजमाइश को तो हम लोग करेंहीगे मगर खां साहब यह तो फरमाइये कि अगर वह शेर आप पर टूटेगा तो आप क्योंकर दौड़ सकेंगे आप तो इन हथियारों के बोझ से हिल भी नहीं सकते।"

खां ने जवाब दिया 'क्या कहा? दौड़ क्योंकर सकेंगे, तोबा। क्या हमारी दाढ़ी की इज्जत एक जानवर ले जायगा। आज सुबह के वक़ आप क्या ख्याल फ़र्माते हैं कि अपनी ज़िन्दगी भर में दिलदारखां ने क्या किसी के मुकाबिल कभी पीठ दिखलाई है? उसे फकत आने दीजिये फिर देखियेगा कि हथियार क्या काम देते हैं। आप एतकाद रखिये कि मैं अकेले हाथ उस का काम तमाम करूंगा। अव्वल तो मैं उसे इस बन्दूक से गोली मारूंगा, वह ज़ख्मी हो जायगा, तब मैं उस पर यों बढ़ूंगा; इतना कह कर वह अपनी लम्बी तलवार उठा और चमचमा कर चारों तरफ फेरने लगा और इधर उधर उछल कूद पैंतरा बदलने लगा।

जब थक कर सांस फूलने लगा तो बोला कहिये इतने पर भी क्या उस्का काम तमाम न होगा! मैं ऐसे २ मामलों में पूरा रुस्तम हूं, और शेर का मारना तो दिलदार खां के लिये गोया लड़कों का खेल है मैं तो उसे एक दम दुम सहित तमाम खा जा सकता हूं। मगर आइये, और जब खेल शुरू हो तो

कोई दिलदार खां के बीच में न आये, क्योंकि इन-शाअल्ला मैं आप दिहक़ानी लोगों को दिखलाया चाहता हूं कि शेर अकेले कैसे मारा जाता है।'

मेरे वालिद ने कहा कि "मैं इस खां को खूब जानता हूं दुनियां में इसके ऐसा बुज़दिल पैदा नहीं हुआ मगर आओ देखो कि यह क्या करता है। मैं यह चाहता हूं कि इसे शेरनी के साम्हने दुम दबा कर लौटता देखूं"।

मैंने कहा "अल्ला जानता है अगर उस ने ऐसी दिल्लगी तो बेशक वह जानवर इसे नाश्ता कर जायगा"।

मेरे वालिदने कहा "तो इस्से हम को क्या मतलब? यह क़िस्मत की बात है मगर मुझे यह यक़ीन है कि वह हरगिज़ तीर के फ़ासले तक भी न जा-यगा"।

खैर हम सब लोग रवाने हुये और दिलदार खां हम लोगों के आगे था वह अब अपनी लम्बी तलवार फेर रहा था और बायें हाथ में बंदूक थी, कभी कभी अपनी लम्बी मूछों को मरोड़ कर खड़ा कर लेता जिस की नोक अन-क़रीब उस के आंख तक पहुंचती थी। हम लोग जल्द जंगल में जा पहुंचे यहां पहुंचतेही मैंने देखा कि खां के चेहरे पर खौफ़ की अलामत छागई।

उस ने कहा "मैं समझता हूं कि वह कोई चीता सीता होगा और हर-गिज़ इस क़ाबिल नहीं कि दिलदार खां उसके लिये तकलीफ़ करे। देखना तो लड़को! मैं यहीं बैठता हूं तुम सब बढ़ कर देखो अगर वह दरहक़ीक़त शेर हो तो फ़ौरन मुझे आकर खबर दो मैं उसे चलकर मार दूंगा"।

हम सब ने कहा "नहीं नहीं आप के बिना तमाम बात बिगड़ जायगी" आखिरकार कुछ देर बाद वह फिर हमलोगों के साथ आगे बढ़ा।

मेरे वालिद ने कहा "मैं तुम्हें पेश्तर ही कह चुका है कि क्या होगा म-गर खैर देखना चाहिये कि इस मामिले का नतीजा क्या निकलता है"॥

चलते २ हम लोगों को कुछ हड्डियां और फटे हुये कपड़े और एक श-ख़्स का सिर जिसे शेर ने मार डाला था रास्ते में एक झाड़ी के पास पड़ा हुआ मिला जिस्से साफ़ सबूत हुआ कि जानवर दूर नहीं है, इनके देखने पर खां के चेहरे पर फिर खौफ़ की अलामत झलकने लगे।

खां बोला "लोग कहते हैं कि वह नर बाघ है, यह वह जानवर है जिसमें उस पागल फ़क़ीर शैतान के बच्चे शाह याक़ूब की नापाक रूह घुसी है और इस पर गोली की चोट नहीं लग सक्ती। तो शैतान के साथ लड़ कर हमलोग क्यों अपनी जान नाहक़ खतरे में डालें" ?

इतने मे एक नौजवान लड़का जो हमलोगों के गांव में निहायत मज़बूत और चालाक था बोल उठा "नहीं नहीं खांसाहिब आप दिल्लगी करते हैं भला मादिन भी कभी नर बाघ हुई है सिवाय इस के हम लोग वैसे पचासों शाह याक़ूब की दाढ़ी जला सक्ते हैं"।

"ख़ामोश" खां ने कहा "देखो तुमारे मुंह से कोई नाशाइस्त: कलमा न निकले क्या तुम नहीं जानते कि नर बाघ बनावटी भी होते हैं। माशाअल्ला योंहीं एक मर्तब: असीरगढ़ में एक फ़क़ीर ने एक शेर बनाकर छोड़ दिया था क्योंकि वहां वालों ने उसे हरएक गांव से एक एक कुंवारी लड़की देने से इनकार किया था" ?

हम लोगों में से चार पांच शख़्स बोल उठे "हां हां वह शेर कैसा था" ? सो कुछ देर तक हम लोग उस शेरनी को दरहक़ीक़त भूल गये।

खां ने एक हाथ से अपनी मोछें टेव कर और दूसरे हाथ से कमरबन्द नीचे को खींच कर कहा "कैसा था ? उसका सिर आम शेरों के सिर से दूना, दांत उस के हाथ २ भर लम्बे और आंखें उस की अंगारे सी चमकती थीं जो रात के वक़्त मसाल के मुवाफ़िक़ जान पड़ती थी उसे दुम न थी और— इतना कह कर वह ठहर गया और हम लोगों का हसना भी मौक़ूफ़ हुआ क्योंकि अनक़रीब ही शेर की गरज निहायत ज़ोर से सुनाई दी और लहमें भर के बाद वह शेरनी अपने नौजवान बच्चे को लिये हुई हवा में दुम हिलाती हम लोगों के पास से झपट कर निकल गई।

उस लड़के ने जिस का बयान मैं पेश्तर कर चुका हूं कहा कहिये खांसाहिब यह तो किसी तरह नर बाघ नहीं होसक्ता। क्या आपने उस की दुम पर नहीं ध्यान किया जिसे वह आप की तरफ़ हिला रही थी।

उसने कहा "दुम हो या न हो इस का हाल मैं नहीं कहता मगर इस में

उस कमबख़्त याकूब की रूह (खुदा उसे ग़ारत करे) बेशक है और मुझ से उस से कुछ मतलब नहीं ! शैतान के मारने की कोशिश करना बेफायदा है ! तुम जानते ही हो कि अगर वह चाहे तो हम सबों को एक फूंक से जहन्नुम भेज सकता है" ।

हम लोगों में चन्द लोग बोल उठे "नामर्द ! नामर्द ! ! गांव में तो आप बड़े बहादुर थे यहां आप को क्या हुआ" ? ।

"कौन मुझे नामर्द कहता है" खां ने गरज के कहा "आओ मेरे साथ और देखो मैं नामर्द हूं कि बहादुर" यह कह कर वह आगे को बढ़ा मगर जिधर शेरनी गई थी उस के दूसरे तरफ़ का रास्ता लिया इस पर कुछ लोगों ने कहा इधर नहीं इधर नहीं, आख़िरकार वह उधर से लौटा ।

तब मेरे वालिद ने कहा "यह तो लड़कों का खेलवाड़ हो रहा है अगर हमलोगों को दरहक़ीक़त कुछ करना है तो उसे सीधे तौर से करना चाहिये" इतना कह कर जिधर वह शेरनी गई थी उसी तरफ़ हमलोग आगे बढ़े ।

चलते २ एक ऐसे कुशादः मैदान में पहुंचे जिस्के एक तरफ़ तो बड़ा पहाड़ था जिस के ऊपर घनी झडियां लगी थीं । एक पुराने शिकारी ने कहा बस वह यहीं होगी । मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी कोई जगह न देखी कि ऐसे मुकाम पर शेरनी न हो ।

हम सब लोग उस पहाड़ और झाड़ी से अनक़रीब तीस क़दम के फ़ासले पर थे, दिलदार खां की हिम्मत आगे बढ़ने की न पड़ती थी ।

उसने आहिस्ते हमलोगों से कहा "चूंकि मैं ऐसे बहुतेरे शेर मारचुका हूं इस लिये मैं सब से उमदा बन्दोबस्त करना जानता हूं और चूंकि इस गरोह में सब से उमदः हथियार मेरे पास है इसलिये मै इस सामने की झाड़ी के पास जहां से पगडंडी गई है खड़ा रहता हूं जब वह वहां से निकलेगी तो इसी राह से जायगी और तब तुमलोग देखोगे कि दिलदार खां उसे कैसा इस्तकबाल देते हैं । इंशाअल्ला मैं अपनी तलवार की नोंक सामने किये रहूंगा और वह उसी पर आ टूटेगी तब मैं अपने तेग़ के एकही हाथ से उस्का काम तमाम कर दूंगा ।

जिस तरफ़ उस ने तलवार की नोक से दिखलाया था उधर जो हमने देखा तो दरहक़ीक़त गांव के रास्ते पर क़रीब दो सौ क़दम के फ़ासले पर एक झाड़ी थी।

मेरे वालिद ने कहा "नहीं नहीं वहां से तो मर्दे आदमी तुम्हें वह दिखलाई भी न पड़ेगी।

खां ने कहा मेरा एतक़ाद रखिये और चलता हुआ।

मेरे वालिद ने कहा मैं तुम्हें पहले ही कह चुका हूं कि क्या होगा ज्योंहीं वह शेर को आते देखेगा त्योंही उतर कर सड़क पर भागेगा।

और तब साथियों से कहा "आइये चूंकि खांसाहब समझते हैं कि वहां उन के रहने से ज्यादा फ़ायदा होगा इसलिये मैं आपलोगों के आगे चलूंगा और देखूंगा कि वह मरदुमख़ोर क्योंकर नहीं मिलता"।

बस हमलोग फ़ौरन तीन हिस्सों में बट गये ताकि दो हिस्से के लोग तो झाड़ी के दोनो तरफ़ जा खड़े होंय और बाकी के लोग घूम कर पहाड़ के पीछे जावें और अगर मुमकिन् हो तो उस पर चढ़ कर शेरनी को दिखलाई देने पर फ़ौरन् गोली मारें और अगर यह न होसके तो पत्थर फेंक कर उसे वहां से निकालें॥

यह सब बन्दोबस्त फ़ौरन् किया गया और गोकि हमलोग झाड़ी से बहुत क़रीब थे मगर तो भी शेरनी का कोई निशान मालूम न होता था। हमलोगों के नज़दीक पहुंचने और इन तैयारियों के करने से उस ने अपनी नाराजगी ज़ाहिर न की और चूंकि वह पेश्तर की थकी हुई थी उसे वहां से निकालना निहायत मुश्किल था, मैं उन लोगोंके साथ था जो झाड़ी के बग़ल में एक तरफ़ खड़े थे। मेरे पास एक तलवार और एक हलकी ढाल के सिवाय कोई दूसरा हथियार न था। दरहक़ीक़त मैं तो बतौर तमाशा देखने वालों के गया था। हमलोग कुछ देर तक वहां खड़े रहे तब तक उन लोगों में से जो पहाड़ के पीछे गये थे एक शख्स एक चट्टान की चोटी पर दिखलाई दिया· उस के पीछे तीन शख्स और भी पहुंचे।

तब उनमें से एक ने चिल्ला कर कहा "आप लोग तयार है मैं इस पत्थर को लुड़काता हूं"।

मेरे वालिद ने कहा बिसमिल्ला कीजिये । तीन शख़्सों ने उस पर ज़ोर किया और आख़िरकार वह पत्थर बड़े ज़ोर से गड़गड़ाता हुआ पहाड़ पर से लुड़का और चूर होकर हज़ारों टुकड़े होगया। कुछ देर तक सन्नाटा छा गया सब लोग चुपचाप खड़े देखते थे मगर शेरनी न निकली। तब मेरे वालिद ने चिल्ला कर कहा "कोशिश कीजिये अगर आप लोग उसे देख सक्ते हैं। अगर दिखलाई पड़े तो गोली मारिये हम सब तयार हैं"। लोगों ने इधर उधर बहुत देखा पर किसी ने कुछ न कहा। आख़िरकार हमलोगों ने देखा कि उन में से एक शख़्श किसी ख़ास जगह को बतला रहा है जैसे कोई किसी को कुछ दिखलाता हो।

मेरे वालिद ने कहा "अल्ला जानता है उस ने शेरनी को देख लिया, ख़बरदार रहो ऐसा न हो कि वह आप लोगों पर अचानचक टूटपड़े"॥

हर एक शख़्स ने अपना पलीता बाल लिया और सब मज़बूती से जम गये आख़िर को जो लोग पहाड़ पर थे उनमें से एक ने बन्दूक़ उठा कर चलाई, साथही दूसरी तरफ़ से इस ज़ोर की आवाज़ आई कि गोया आसमान फट गया और झपट कर शेरनी का बच्चा बाहर निकला। देखने से जान पड़ता था कि उसे सख़्त चोट लगी थी क्योंकि वह थोड़ी ही दूर जाकर लेटगया और ज़ोर से गरजने लगा। वह अनक़रीब जवान होचुका था और उस का गरजना निहायत ख़ौफ़नाक था। हम लोगों में से एक शख़्स ने गोली चलाई जिस के लगने पर उस ने फिर जुम्बिश न की।

मेरे वालिद ने कहा "अब हमलोगों को सख़्त काम करना पड़ेगा वह इस क़दर गुस्से में आकर तड़पेगी कि जिसका बयान नहीं हो सक्ता। अब यह निहायत ख़तरे का मुक़ाम है मगर अपने निशाने से ख़बरदार रहना, वह हमलोगों के पास हरगिज पहुंच न सकेगी। मेरा निशाना कभी ख़ाली नहीं गया, मगर शायद गोली भरपूर न बैठे इसलिये आप लोग सब ख़बरदार रहें"।

फिर मेरे वालिद ने उन लोगों से जो पहाड़ पर थे कहा कि दूसरा पत्थर लुढ़काओ। ठीक किनारेही पर एक बहुत बड़ा पत्थर पड़ा था। कई बेर ढ़केलने के बाद आखिरकार वह वहां से लुड़का और पहिले पत्थर के मानिन्द बड़े ज़ोर से गड़गड़ाता हुआ चूर चूर हो गया। यह कोशिश कामयाब हुई क्योंकि शेरनी निकल कर हमारी तरफ़ दौड़ी और साम्हने आकर खड़ी हो गई। मैने ऐसा शेर पेश्तर कभी न देखा था सो उसकी शक्ल देख कर मुझे निहायत ताज्जुब और खुशी हुई। वह हमलोगों के साम्हने दुम को सीधे उठाये खड़ी थी, फकत उसके दुम की नोक हवा में इधर उधर हिलती थी, उसकी निहायत खौफनाक चमकीली आंखें हमलोगों की तरफ एक टक लगी थीं उसका ख्याल अपने बच्चे पर जो पासही पड़ा था मुतलक न था और यह न मालुम पड़ता था कि वह अब क्या करेगी और किधर झपटेगी। हम सब लोग चुप चाप अपनी २ बन्दूकें कंधे पर लेकर यों खड़े थे गोया मिट्टी के पुतले हों। मेरे वालिद ने पहिले बन्दूक छोड़ी और बादजां दूसरों ने भी आवाज़ की, मैं कुल तमाशा साफ २ देख सकता था क्योंकि मेरे पास कोई बन्दूक न थी। मेरे वालिद की गोली उसे लगी और वह डगमगा गई, मगर दूसरों की गोली खाली गई सो वह बड़े ज़ोर से गरज कर सीधे हमलोगों पर टूटी पर हमलोगों के एक दम शोर मचाने और हथियारों के चमकाने से वह लौट गई और आहिस्ते २ गरजती हुई उसी झाड़ी की तरफ़ चली जहां दिलदार खां बैठा हुआ था।

इतने में दूसरे गरोहवालों ने उसे जाते देखा और सब बन्दूके छूटने लगीं, उसे कोई न कोई गोली बेशक लगी क्योंकि वह खड़ी होकर पीछे फिरी, और और एक मर्तबा गरज कर दांत दिखला फिर उछलती हुई आगे बढ़ी। मैं समझता हूं कि दिलदार खां को मुतलक यह ख्याल न था कि वह उसके पास चली आती है क्योंकि वह झाड़ी के पीछे छिपा था और कुछ देख न सकता था। मेरे वालिद ने कहा "अगलब है कि वह बच जाय, मगर मुशकिल है, पर अब क्या किया जाय" किसी ने कुछ जवाब न दिया, इतने में झट मैने अपनी तलवार खींच ली और तेज़ी के साथ उस शेरनी के पीछे जो गुस्से से

चली जाती थी दोड़ा। वालिद, मेरे खतरे से घबड़ा कर मुझे पुकारने लगी "बेटा अमीरअली लौट आ फौरन लौट आया अल्लाह यह भी मारा जायगा"।

मगर मैंने कुछ परवाह न की और कौन उनमें से मेरे मुकाबिल दौड़ सकता था, ताहम चन्द लोग मेरे पीछे आये। मै दौड़ताही जाता था, और देखा कि शेरनी घायल होकर कमजोर होगई है मगर तौभी तेज़ दौड़ी जाती थी। मैंने उसे झाड़ी के पास पहुंचते देखा इतनेही में वह कमबख़ दिलदार खां दौड़ कर ठीक उसके रास्ते में आगया और दोनों हाथ फैला कर मारे खौफ़ के बुत सा खड़ा रह गया। उसे देख कर वह दोड़ते २ दबक गई और फौरन् उस पर उछली। वह उसके नीचे गिर पड़ा और शेरनी गुस्से से उसका बदन फाड़ने लगी। तौभी मै न ठहरा मेरे पीछेवाले मुझे लौटने के लिये चिल्ला कर पुकारते थे पर मैं न लौटा। मैंने उस खतरे पर कुछ भी खयाल न किया जब कभी खयाल करता भी था तो जोश के आगे खौफ़ दब जाता था। बस मैं फौरन् उस शेरनी के पास जो सिर झुका कर दिलदार खां का बदन फाड़ रही थी पहुंच गया। मैंने फक़त एकही हाथ उस पर चलाया—और शुक्र है अल्लाह ताला का कि वह कामयाब हुआ। मेरी तलवार उसके गर्दन के पिछले हिस्से पर भरपूर घुस गई और वह अबकरीब मुर्दा होकर गिर पड़ी। मैं उछल कर एक तरफ जा रहा और खड़ा होकर देखने लगा। वह दरह कीक़त मर गई और उस खांके बदन पर गिर कर तड़फड़ाने लगी। कमबख़! बुज़दिल। वह तो पहलेही ज़ख़्मी होगई थी अगर वह चुप चाप झाड़ी के पास ही पड़ा रहता तो शेरनी उसके तरफ मुतवज्जिह भी न होतीं। मगर उसने भाग जाने की कोशिश की और शेरनी के देखते ही उसके हाथ पांव फूल गये। गोकि यह सब बातें एक लहमे में होगईं मगर साहब! मैं गोया उसे अपनी आंखों के सामने अब भी खड़े देखता हूं। उसकी वह बड़ी बड़ी आखें सिर से बाहर निकली आती थी और वह दोनों हाथ फैलाये यों खड़ा था गोया शेरनी से इस्तकबाल के लिये आया हो। बुज़दिल! अगर वह झाड़ी के पीछे बैठा रहता तो महफूज़ था और वहां से उस पर गोली भी चला सकता था मगर अफ़सोस वह शेरनी के सामने आगया और उसने उसका त-

माम चेहरा नींच खाया। और उसके पेट में बहुत बड़े ज़ख़म हो गये थे और वह मर गया। मेरे वालिद फौरन् मेरे पास पहुंचे और मुझे गले से लगा कर रोने लग गये॥

उसने कहा "मेरे फर्ज़न्द! तुमने क्यों कर अपनी जान इस खतरे में डाली, तुमने क्यों अपनी जिन्दगी इस कमवख्त के लिये इस तरह ज़ाया करना चाहा, क्यों मैं न कहता था कि यह बुज़दिल है। पर अब मुझे तुम्हारा बड़ा फ़ख़र है तुमने हम सभों को शर्मिन्दा किया। तब उसने लोगों के तरफ़ फिरकर कहा देखिये आज हम लोगों के चेहरे को एक लड़के ने काला कर दिया। आप लोगों में कौन ऐसा शख्स है जो ऐसी तलवार की वार मारता। देखो आधी तलवार हड्डी में घुस गई है। माशाअल्लाह यह बड़ा बहादुर लड़का है" और फिर मेरे वालिदने मुझे अपने सीने से लगा लिया।

मेरे कसरत के उस्ताद वेनीसिंह ने कहा "जनाब इस उमदे तालीम के लिये मेरा भी कुछ लिहाज़ होना चाहिये। इस्मायल साहब मैं आप से हमेश कहता आया हूं कि साहबज़ादा अपने वालिद के माफ़िक होगा खुदा इसके सिफ़तों की तरक्की करे और इसकी उमर हज़ार हैरस की हो। फ़िर मुझ से कहने लगा "क्यों! मैंने बारहा तुमको यह काट सिखाई थी देखतेही हो कि तुमने दौड़ते २ बांये हाथ पर काट किया बहुत कमलोग ऐसे हैं जिन्हे ऐसे हाथ पर एतकाद हो। तुम ने इसका जौहर पा लिया है फक़त थोड़े रस की ज़रूरत है फिर तो मेरे माफ़िक उमदे तलवरिये हो जाओगे। फिर हँस कर कहने लगा कि शायद आज तुम्हारे उस्ताद का दिल भी खुश हो, इसका ऐसा उमदः आगाज़ है कि साहेबज़ादा हमेशः इस बुड्ढे राजपूत को याद रक्खेगा।

मेरे वालिद ने जबाब दिया "हां हां, मुझे आप की नज़र का ख़याल है आज सेपहर को मकान पर तशरीफ़ लाइयेगा, इनशाअल्ला हम लोग इतना जानते हैं कि मेहरवानगी का शुकरीया क्यों कर अदा करना होता है"—सो जब वह आया उसे उमदा इनाम दिया गया।

मैं यह कह सकता हूं कि उसकी तालीम से मैं हर तरह की मरदानगी कसरत मे होशयार हो गया था, बंदूक चलाना, बरछी फेंकना, कुश्ती लड़ना हरकिस्म के तलवारों का इस्तियामाल करना मैने अच्छी तरह सीख लियाथा उस गांव मे क्या, मैं कह सकता हूं कि आस पास के दूर दूर बस्ती तक कोई भी ऐसा शख्स न था जो इन कसरतों मे मेरा मुकाबिला कर सके।

उस रातको वालिद ने मुझ से कहा "मेरे फर्जन्द अमीर! कल तुम मेरे साथ शिवपुर चलना। इसके कहने की कोई ज़रूरत नहीं कि आज की बहादुरी तुम्हें तुम्हारे आइन्दः साथियों के निगाह में किस कद्‌र ज्यादा रौनक बकशेगी। मैने कल के रवानगी की खबर और आज का थोड़ा बहुत हाल पहिले ही भेज दिया है जो उनलोगों को इसबात का शौक दिलाने के लिये काफ़ी है कि वे इस बहादुर काम के करनेवालेको देखें, मैने खुलासा हाल इस का इसलिये नहीं भेजा कि वे उस को मुझ से सुनने के लिये ज्यादा शौक रखते होंगे। मेरे गरोह के कई अहबाब अबतक तुम्हें शुबहे की निगाह से देखते थे और अगर मैं जमादारी के वहदे पर नहोता तो मुझे लाचार होकर अपना इरादा तुम्हारे बारे में कभी जाहिर करना पड़ता। इसलिये मैं इस मौके को निहायत उमदा और मुबारक समझता हूं क्योंकि जब वे देखेंगे कि तुमने कैसी बहादुरी के साथ इस काम को अपने जान पर खेल कर अंजाम दिया है खासकर ऐसे २ पुराने सिपाहियों के रूबरू कि जो बड़ी २ लड़ाइयों मे शरीक हो चुके हैं तो वे निहायत सर्गर्मी और इज्जत के साथ तुम्हारा इस्तकबाल करेंगे।

मैंने कहा "यह उस खुदा की मर्जी थी वर्नः मेरे जैसे लड़के की क्या ताकत थी जो ऐसा काम कर सकता"?

मेरे वालिद ने कहा "नहीं नहीं अब तुम लड़के नहीं हो आज तुमने लड़कापन की सब बुज़दिली को दुर बहा दिया। यह तबदील गोकि एकबारगी है मगर तोभी पूरी है और मैं उम्मेद करता हूं कि तुम्हारी तबीयत हमेशा ऐसी ही कायम रहेगी।

मैने जवाब दिया "इनशा अल्ला ऐसा ही होगा, अब मैं वह नहीं हूं जो

पेशतर था, आज यह पहिली मर्तबः मैंने खून बहाया है और खुदा चाहे तो यह आखिरी न होगा"।

चौथापर्व।

शेर के मारे जाने के दूसरे दिन मैं अपने वालिद के साथ उस गांव से रवाना हुआ। हम लोग घोड़े पर सवार थे और चौथे दिन सुबह को शिवपुर नामी कस्बे में (जहां से हमलोगों की चढ़ाई होने को थी) पहुँच गये। यहीं पर मैं ठगों के गोरह में शामिल होने को था। मेरे दिल में बड़ी बेसबरी इसलिये हो रही थी के मेरे साथ कौन २ रसम किये जायंगे और कुछ खौफ भी मालूम होताथा क्योंकि मैं उनके तौर तरीके से बिलकुल ना वाकिफ था। हमलोग मोदी के मकान में उतरे, यहां और भी कई एक ठगों के सरदार टिके थे। कुछदेर आराम करने के बाद मेरे वालिद ने कहा कि मेरे साथ उस कमिटी में चलो जहां इस बात की सलाह होगी किहमलोग क्या करेंगे। मैं उन दस ठगों के सामने पेश किया गया जो मुखतलिफ गरोह के जमादार थे। मेरे वालिद की खातिर दारी और इज्जत से जो उन लोगों ने की थी मुझे साफ मालूम हो गया के मेरे वालिद इन सभों के सरदार थे। जो कुछ मेरी खातिरी उनलोगों ने की उस्से मै निहायत आसूदः हुआ। और जो कुछ कि बयान शेर के मारने वगैरह का मेरे वालिद ने उनसे बयान किया उस्से मैंने उन लोगों के निगाह में इज्जत का ऊंचा दर्जा पाया।

चूंकि अभी दसहरे के तिहवार को दो दिन बाकी थे इसलिये मेरे ठग बनाये जाने की रसम तब तक टाल दी गई क्योंकि तमाम कौम खास कर ठग लोग उस दिन को निहायत मुबारक समझते हैं। आप जानते ही हैं कि उस दिन तमाम फौज के लोग अकसर अपनी चढ़ाई दुश्मनों पर करते हैं सो वैसी ही चाल हम ठग लोगों में भी है क्योंकि बरसात के बीत जाने से यह उमेद पाई जाती है कि हमारी चढ़ाई की रुकावट बसबब बारिश के नहीं होसक्ती और बरसात के बाद जो खुले और साफ दिन होते हैं उनमें अकसर मुसाफिर

लोग सफ़र दूर औ दराज़ का करते हैं और हम लोगों को उनके साथ मिल जाने में सुबीता होता है और माल भी ज़ादा हाथ लगता है, सिवाय इसके हम लोगों की सरपरस्त भवानी देवी का यह पवित्र याने पाक दिन है। चूंकि मै मुसलमान था मुझे यह बात समझ न पड़ती थी कि दसहरे के तिहवार की इतनी इज्जत क्यों की जाती है या उसे मानते ही क्यों हैं? सो मैंने अपने वालिद से इस शुबहे को रफ़ा करने की अर्ज़ की। उनने कहा के तुमें इस बात के पूरी तौर से समझाने के लिये यह निहायत ज़रूरी है कि मै तुम्हें अपने रोज़गार की खुदाई बुनियाद का थोड़ा सा अहवाल बयान कर दूं जो हिन्दू लोगों के ईमान से ज्यादातर मुतअल्लिक़ है। इन्हीं हिन्दू भाइयों ने हम मुसलमानों को ठगी का हुनर सिखलाया है। मैंने कहा दरहक़ीक़त यह बड़े ताज़ुब की बात है कि हमारे पाक पैगम्बर और काफ़िरों के ईमान से क्या ताअल्लुक़ है।

मेरे वालिद ने कहा कि मैं इस मुश्किल को ठीक २ हल नहीं कर सक्ता पर चूंकि उन लोगों का मज़हब हमारे मज़हब से निहायत पुराना और बेशक खुदाई बुनियाद से है उनमें बहुत सी बातें ऐसी हैं कि जिन पर सच्चे मज़हब का हर एक शक्स बगैर नुकसान के अमल कर सक्ता है क्योंकि वह उनके कुल तौर तरीकों में शामिल नहीं होता। दरहकाकत यह बात गैरमुमकिन् है क्योंकि कोई भी शक्स हिन्दू नहीं हो सक्ता, मगर जैसा कि मै पेश्तर कह चुका हूं कि ठगी वह वसीला है जिस्से अल्ला ताला अपने मकसदों को काम में लाता है। और चूंकि यह रोज़गार हम लोगों का पुश्त दरपुश्त से चला आता है और जो उन के ख़ानदान में होते हैं उन्हें उसका करना और मानना फ़र्ज़ है, तो यह कभी मुम्किन् नहीं है कि वे लोग इसे छोड़ सकें अगर उन की ख़्वाहिश भी ऐसी हो। इसलिये इसकाम के करने में हिन्दुओं के साथ जिनसे इस की बुनियाद है कोई गुनाह नहीं है। समझते हो न? मैने कहा जी हां खूब समझता हूं मेरा सवाल कुछ यह न था कि इस तेहवार को मानना चाहिये या नहीं। मगर यह जानने के लिये था कि मुसलमान लोग क्यों हिन्दुओं के तिहवार को मानने और रखने लग गये। मेरे वालिद ने कहा कि फ़क़त

दसहराही एक ऐसा तिहवार है जो माना जाता है और उसका सबब यह है कि साल भरमें यही सबसे उमदा वक़ हमलोगों को अपनी चढ़ाई शुरू करनेका है और इसे सब हिन्दू ठगलोग पाक मानते हैं। पर मै तुम्हें ठगीकी बुनियाद बतलाता हूं ताकि तुम्हें यह मालूम हो जाय और तुम खुद समझ सको कि यह कितनी पुरानी बात है और उस वक़ "भवानी" ने जो हुक्म दिया था उसको सबलोग कैसा मानते आये हैं। हिन्दूलोग बयान करते हैं कि दुनिया के शुरू में खुदा से दो ताकतें नमूद हुईं एक पैदा करनेवाली और दूसरी मारने वाली। जैसा होताही है इन दोनों की आपस मे बड़ी दुश्मनी थी और अब तक है। पैदा करनेवाली ताकत ने दुनिया को इस तेज़ी से बसाना शुरू किया कि मारनेवाली ताकत उसके मुकाबिल न ठहर सकी तब उसे यह हुक्म दियागया कि तू अपना मतलब पूरा करने के लिये चाहे जो वसीला काम में ला। तब उसकी औरत देवी भवानी या कालीने एक मूर्ति बनाई और उसमे जान डाल कर उसे जिलादिया। जब वह जी उठा तब उसने अपने बहुत से भक्तों को जमा किया जिनका नाम उसने ठग रक्खा। भवानी देवी ने उन्हे ठगी का हुनर सिखाया और जो मूर्ति उसने बनाया था उसे उन भक्तों के साम्हने ही मार कर दिखाया जैसे कि हमलोग आज कल करते हैं। उसने अपने उन भक्तों को दूसरों की बनिस्बत ज्यादा अक्ल और चालाकी देकर दुनिया में भेज दिया और उनकी मेहनत के लिये यही इनाम कायम रक्खा कि जिन्हे वे मारें उनका माल लूट कर अपने ही पास रक्खें और उन्हें यह हुक्म दे दिया कि चाहे कुछ भी हो उनके लाशों की कुछ फिक्र मत करो मैं खुद उन्हे इस दुनिया से उठा ले जाऊंगी। कई जुग इसी तरह बीत गये, देवी हमेश: अपने भक्तों की हिफ़ाजत करती थी और वे लोग भी हमेश ईमानदार रहते थे। पर ज्यों ज्यों यह जमाना बिगड़ता गया त्यों त्यों उन लोगों मे भी बुराइयां आने लगी। एक दिन कुछ लोगों ने बड़ी हिम्मत करके यह देखना चाहा कि भवानी क्योंकर लाशों को उठा ले जाती है सो वे लोग एक मुसाफिर को मारकर एक झाड़ीके पीछे छिप रहे और देखने लगे कि देवी क्योंकर आती है और क्या करती है, वे समझते थे कि हमें यहां कोई नहीं देख

सकता मगर किस आदमी की ताकत है कि भवानी की निगाह से छिप जाय। देवी ने उन्हें फौरन् देख लिया और अपने साम्हने बुलाया। देवी की खौफ़नाक शक्ल जो गुस्से से लाल हो रही थी देखकर वे लोग डर गये और भागने की कोशिश करने लगे पर देवीने उन्हें पकड़ लिया और उनके कच्चे ईमान के लिये उनकी सख्त मलामत की।

आखिरकार देवी ने कहा "तुमने मुझे देख लिया और मैं वह शक्ति हूं कि जिसे आज तक किसी इनसान ने बगैर मौत के नहीं देखा पर खैर अब की तो मैं तुम्हे छोड़ देती हूं मगर आज से लेकर अब मैं तुम्हारी वैसी हिफ़ाजत न करूंगी जैसे मैं करती आई हूं। जिन मुसाफिरों को तुम मारोगे उनकी लाशें मैं न हटाऊंगी सो उनके हटाने या कहीं छिपा देनेका बन्दोबस्त तुम्हीं लोगों को करना होगा। तुम लोग हमेश: कामयाब न होगे और कभी २ दुनयवी लोग तुम्हे गिरफ़्तार कर लिया करेंगे और तुम्हारी सज़ा होगी मगर तुम्हारी अक्लमंदी और चालाकी तुम्हारे साथ हमेश: रहेगी। अब आइन्दा को मैं तुम्हारी रहनुमाई सगुनों के ज़रिये से करूंगी मगर मेरा यह बद्दुआ याने शाप दुनिया के आखिर दम तक तुम्हारे साथ रहेगी।

इतना कहकर देवी गायब हो गई और उन्हें उनकी बेवकूफ़ी और ढीठापन के नतीजे का फल पाने के लिये छोड़ गई। मगर उसने अपनी हिफाजत आज तक हमलोगों पर से नहीं हटाई। यह सही है कि जो हमारे हाथ से मारे जाते हैं उनकी लाशों का पता कभी २ लग जाता है और कई मर्तब: इसी सबब से ठग लोगों को तकलीफ़ उठानी पड़ीहै जैसा मैंने सुना है मगर मैंने अपनी ज़िन्दगी में आज तक ऐसी बात नहीं देखी। मुझे यह पक्का एतकाद है कि ये वारदातें फ़कत इसी लिये हुई हैं कि जिन लोगों ने भवानी के सगुन या बलिदान वगैरह में गफ़लत किया है या और किसी तरह देवी को नाराज़ किया है उनकी सज़ा की जाय जिसमे दूसरे लोग आइन्दे को होशियार रहें। सो अब तुम देखते हो कि यह कैसी जरूरी बात है कि जिन सगुनों और रसमों की चाल हमलोगोंमें मुद्दत से होती आईहै उनका मानना हमलोगों का फर्ज़ है क्योंकि उनमे गफ़लत करने से भवानी की नाराज़गी फौ-

रन् हम लोगों पर होती है फिर हमारे मजहब में भी ऐसी कोई बात नहीं है जो इसे मना करे। हमलोग हज़रत पैगम्बर साहब के हुक्म की पाबन्दी रखते और हर रोज़ दिन में पांच मर्तब: नमाज़ पढ़ते हैं, हम लोग अपने मज़हब के सब असूलों पर ख्याल रखते और हर्गिज़ बुतपरस्ती नहीं करते। यह बात इस्से भी ज़ाहीर है कि पुराने ज़माने से लेकर जबसे हमारे बुजुर्गों ने हिन्दोस्तान पर हमला किया हम लोग योंही करते आये हैं, अगर यहबात किसी तरह हमारे रसूलिल्लाह की नागवारखातिर होती तो बेशक उनकी नाराज़गी के आसार पाये जाते। हम लोगों की कारवाइयां फजूल होजातीं, कोशिश वे फायदा होती और जिन्दगी खराब खस्ता वो गिरां होती और इस की मुद्दतों पेश्तर हमलोगों ने ठगी के रोज़गार या उसके हिन्दू मोतक़िदों से अपना तअलुक तर्क कर दिया होता।

मैने कहा मैं खूब समझ गया क्योंकि आपका बयान निहायत अजीब औ ग़रीब है, आपने बहुत सही फ़रमाया कि हम लोग खुदावन्दकरीम रहीम पर्वर्दिगार के खास ज़ेर साये में है सो ऐसे चाल या रसम के बारे में जो एक मुद्दत से पाक वो साफ चली आई है किसी तरह का शक वो शुबहा करना बेजा बल्कि गुनाह होगा। मै तस्लीम करता हूं कि मुझे इन काफ़िरो का साथ निहायत नापसन्द था क्योंकि मेरे तालीमदिहन्द: उस पुराने मुल्ला ने मुझे ऐसीही तरबीयत दी थी कि ये हिन्दू लोग महज़ गलत और नाक़िस मजहब मे डूबे हुये हैं मगर यातो यह उसकी जाहिली थी या यह सरासर उसकी बेवकूफी और तअस्सुब का बायस था।

मेरे वालिद ने कहा तो अब मैं इस्से ज्यादा कुछ नहीं कहता कि तुम्हारा मेल और बर्ताव हिन्दुओं हीं से बहुत रहेगा जो सब अकसर ऊंचे जात के होते हैं और तुम देखोगे कि मुसलमानों की बनिस्बत ये लोग ज्यादातर ईमानदार और दोस्ती के काबिल होते हैं। मेरा तजरबा जहां तक है मैं इन लोगों को ऐसाही पाता हूं।

दशहरे के रोज़ मुझे ठग बनाने की रसम शुरू हुई। पहिले तो मै नहलाया गया और बादज़ां नई और कोरी साफ वो सुथरी सुफेद पोशाक मुझे प-

छिनाई गई। मेरे वालिद ने मेरा हाथ धरा और मुझे आगे करके उस कमरे मे ले गये कि जहां गरोह के वे सब अफसर लोग जिनका बयान मैं कर चुका हूं एक साफ सुफेद कपड़े को बीच में बिछाकर बैठे थे। मेरे वालिद ने आगे बढ़ कर उन लोगों से पूछा कि आप लोग इसे ठग बनाने और बतौर बिरादर के शरीक करने में राज़ी हैं या नहीं। सभों ने कहा "हां हम लोग राजी हैं"।

तब वे सब लोग मेरे वालिद के साथ उठ खड़े हुये और मुझे खुले मैदान में ले जाकर खड़ा किया। मेरे वालिद ने अपने दोनों हाथ और आंखें अस्मान की तरफ़ उठाकर बुलन्द आवाज़ से कहा कि "हे भवानी जगत की माता! जिसके हम लोग भगत हैं तू अपने इस खादिम को कबूल कर,— अपनी हिफाजत इसे बख्श और कोई ऐसा सगुन हमे दे कि जिस्से तेरी मर्जी हमें जान पड़े":

कुछ देर तक हम लोग चुप चाप खड़े रहे आखिर को हमारे सिर के ऊपरही एक दरख़ पर एक छोटे से उल्लू की टरटराहट सुनाई पड़ी।

इसके सुनतेही सब सर्दार लोग "जय भवानी! जय भवानी" करके चिल्ला उठे और मेरे वालिद ने मुझे यह कह कर गले से लगा लिया—"कि मेरे फ़र्जन्द! अब तुम खुश होओ सगुन बहुतही अच्छा हुआ। हम लोगों को ऐसी उम्मेद हर्गिज़ न थी तुमारी कबूलियत भवानी के दरबार मे पूरी तौर से हुई।

मुझे फिर उसी कमरे में ले गये और एक सुफेद रूमाल के ऊपर एक कुल्हाड़ा रखकर जो हमलोगों के रोज़गार का खास निशान है मेरे दाहिने हाथ मे दिया गया। मुझ से यह कहा गया कि इसे अपने सीने तक ऊपर उठाओ और तब एक निहायत खौफनाक कसम मुझे दी गई जिसे मैंने सब के साम्हने अपना बांया हाथ हवा में उठाकर खाया और अपने तई भवानी का खादिम बनाया। वही कसम कुरान शरीफ़ को ले कर मुझे फिर खाना पड़ा। इसके बाद थोड़ासा पाक गुड़ मुझे खाने को दिया गया और तब मेरे ठग बनने की रसम खतम हुई। तब मेरे वालिद को लोगों ने इस खुशनसीबी के लिये बहुत मुबारकबादी दी और उन्होंने मुझ से यों कहा कि—

मेरे फ़र्ज़न्द! तूने अपने ऊपर वह रोज़गार लिया है जो सबसे पुराना और

खुदा को सबसे ज्यादा पसन्द है। तुमने अब इस बात की कसम खाई है कि तुम ईमानदार और दिलेर रहोगे और अपना भेद हरगिज़ किसी से न कहोगे—जो कोई इन्सान खुद बखुद तुम्हारे हाथ में आ पड़े या तुम्हारी अक्लमन्दी से तुम्हारे फन्दे में आवे उसे बगैर मारे नहीं रहना फ़कत उन्हीं लोगों को छोड़ देना चाहिए जिनका मारना हमारे मज़हब से मना है और जो पाक माने जाते हैं। ये अशखास उस जात के लोग हैं जिन पर हमें अख़तियार नहीं दिया गया है और जिनकी क़ुरबानी हमारी देवी भवानी को पसन्द नहीं है मसलन् धोबी, भाट, सिक्ख, नानकशाही, मदारी, फ़कीर, नचनिये, गवैये, भंगी, तेली लोहार, बरई, लूले, और कोढ़ी लोग। इन लोगों को छोड़ तमाम इन्सान तुमारी बरबादी के लिये खुले पड़े हैं जिन्हे मौका पाने पर कभी किसी तरह न छोड़ना चाहिए मगर सगुन का लिहाज़ हमेशा रखना चाहिये। बस जो कुछ मुझे कहना था मैं कह चुका, अब तुम ठग हुये और जो कुछ इस रोज़गार मे तुम्हें सीखना बाकी है वह तुम्हारा गुरू तुम्हें मौके २ पर सिखलाता जायगा।

मैंने कहा "बस काफ़ी है, मैं मौत तक आपका साथी हूं मैं खुदासे इस बात की दुआ मागता हूं कि वह जल्द कोई ऐसा मौका देवे कि मैं अपनी कारगुज़ारी और मुहब्बत का नमूना आपको दिखला सकूं"।

साहब, इस तरह मैं ठग हुआ—अगर मैंने यह काम आम लोगों के मुाफ़िक शुरू किया होता—मेरी यह मुराद है कि अगर मैं अपने वालिद जैसे इख़्तियारी अफसर का बेटा न होता तो मुझे यह काम छोटे दरजे से शुरू करना होता और अगरचे मैं अपनी चालाकी, अक्लमंदी और बहादुरी के सबूत दिखलाता तो कुछ वर्षों के बाद मेरी तरक्की होती। मगर यह सब दिक्कतें मुझे न उठानी पड़ीं और गोकि मैं अपनी कमसीनी के बायस अफ़सरी के लायक न था ताहम अपने दर्जे में दूसरों से ऊंचा था और मेरे बारे मे लोगों का यह गुमान था कि अगर मेरे वालिद चंद बरस बाद बसबब ज़ईफी के गोशेनशीनी इख़्तियार करेंगे तो उन की जगह अफसरी का काम मेरे सुपुर्द किया जायगा।

जिस मशवरत् के लिये ठगों के सब सरदार जमा हुये थे वह यह थी कि मेरे वालिद ने अपने और दो दूसरे अफसरों के मातहत् जिनमे से एक हुसैन था, दक्खिन के रास्तेपर चढ़ाई करने का इरादा किया था, और यह सलाह थी कि नागपुर तक साथही साथ बढ़ना, जहां से मेरे वालिद हैदराबाद को जावें और वहां से लोग दो गरोह में बंटजांये, एक तो औरंगाबाद को जावे, वहां से खानदेश और बुरहानपुर होते हुये इन्दौर जीकर सिवपुर को लौट आवे; और दूसरी गरोह भी औरंगाबाद को जाये मगर वहां से पूनेका रास्ता पकड़े; बादजां अगर मुम्किन् होतो सूरत तक जाकर फिर मकान की तरफ् लौटे; पर जो दिन ज्यादा लग जावें तो बुरहानपुर से होकर किसी उम्दे रास्ते से मकान को पलट आवे, और आखिर में हम सब लोग मौसिम बरसात के पेश्तर शिउपुर मे फिर जमा हो जावें।

इसपर किसी तरह की ना-इत्तिफाकी न हुई, बल्कि सबोंने इसे बहुत पसन्द किया क्योंकि एक तो इस्मायल के मातहत् की चढ़ाई हमेशा कामयाब होती थी दूसरे इधर कई बरसों से दक्खिन की चढ़ाई न हुई थी। बाकी छोटे मोटे गरोहों को यह हुक्म दिया गया कि तुम हिन्दोस्तान के सब हिस्सों मे घूमते हुये बनारस तक चले जाओ और सागर होते हुये नर्बदा के आस पास तमाम मुलकों में अपना कार करो—जहां जैसा मौका पड़े वहां वैसी कारवाई कर लो क्यों कि उनका बन्दोबस्त पेश्तर से नहीं हो सकता था।

इस तरह सब बातें पक्की करके कुछ दिन बाद हम लोगों ने सफ़र किया। हम लोगों के साथ ६० आदमी, हुसैन के साथ ४५, और दूसरे जमादार के साथ जिसका नाम गाजस खां था ३० आदमी थे; कुल १३५ आदमियों का एक बड़ा गरोह था।

सफ़र के पेश्तर सगुनों का देखना निहायत ज़रूरी बात थी, और चूंकि ये रसम अजीब औ गरीब हैं मैं इनका हाल आपको सुनाता हूं—मगर इतना जानना चाहिये कि कोई भी चढ़ाई चाहे छोटी हो या बड़ी, बगैर सगुन देखे नहीं हो सकती थी।

जिस रोज़ हमलोग रवाना होने को थे उस दिन सुबह के वक़् जब सब

तैयारियां हो चुकीं हम एक जगह पर जो सड़क के किनारे पर चुन लिया गया था गये, यह मुकाम गांव से बहुत करीब था, और उस वक्त जमायत के तमाम लोग हाज़िर थे। बद्रीनाथ नामक एक शख्स जो निहायत अक्लमंद और इज़्ज़तदार था और जो इन रसूमातों से निहायत वाकिफ़कार था हाथ मे कुल्हाड़े को लेकर जिस्की पूजा पेश्तर होचुकी थी आगे चला और मेरे वालिद और तीन जमादार उसके पीछे पीछे चले। चूंकि मेरे वालिद तमाम गरोह के अफ़सर थे इसलिये वे पानी से भरे हुये एक लोटेको जो रस्सी से दाहिनी तरफ़ लटकता था मुंह में दबाकर चलते थे। अगर वह लोटा गिर पड़ता तो अफ़सोस! यह उनके लिये बड़ा असगुन होता। उस बरस या उसके बाद दूसरे बरस में उन्हे मौत के चंगुल में पड़ने से कोई न बचा सकता। हम लोग आहिस्ते २ उस मुकाम पर पहुंचे जो पेश्तर मुकर्रर हो चुका था, वहां पहुंचतेही मेरे वालिद खड़े हो गये। तब दक्खिन की तरफ मुंह करके जिधर हम लोग सफ़र करने को थे उनने अपना बांया हाथ अपने सीने पर रक्खा और बड़े संजीदगी के साथ आसमान की तरफ़ आंखे उठा कर बुलन्द आवाज़ से भवानी की दुआ यों मांगी कि—

"हे जगत की माता और हमलोगों की रक्षा करनेवाली देवी! अगर तुझे यह चढ़ाई पसन्द है तो हमें अपनी सहायता दे और अपने मन का कोई अच्छा सगुन हमें दिखला" इतना कह कर वे चुप हो गये और सभों ने इसी दुआ को ज़ोर से चिल्ला कर कहा।

सबके दिल में खलबली मच रही थी कि क्या सगुन होता है; इस कदर बेसब्री थी कि गरोह में सबके सब दम बन्द किये खड़े थे। बहुत देर तक अनकरीब आध घंटे के हमलोग चुप चाप खड़े थे, कोई भी चूं न करता था। उस वक्त हमलोगों के जमाअत की संजीदगी और खामोशी को देखने से एक तरह का अजीब असर दिल पर पैदा होता था। आखिरकार "पिल्हाऊ" याने बायें तरफ का सगुन हुआ, किसी गदहे के रेंकने की आवाज़ आई और साथही दहिने हाथ का सगुन याने "थिब्राऊ" भी हुआ। अब इस्से बढ़ कर और क्या हो सकता था, बरसों से ऐसा सगुन सुनने में न आया था जिसमें

भारी कामयाबी और गहिरे माल की उम्मेद पाई गई हो। सब के सब बड़े ज़ोर से चिल्ला कर भवानी की जै मनाने लगे और एक दूसरे से मिल कर सगुन की उमदगी और सफ़र की उम्मेद पर मुबारकबादी देने लगे।

मेरे वालिद उस जगह पर सात घंटे बराबर बैठे रहे, इस अर्से में सफ़र की सब तैयारियां हो रहीं थीं। इसके बाद वे उठे और गनेशपुर का सब से नज़दीक का रास्ता हमलोगों ने लिया।

मंज़िल पहुंचने पर शाम होगई और हमलोगों ने वहीं डेरा कर दिया। बद्रीनाथ निशान और कुल्हाड़े को जो "खुशी" कहलाता था लेकर आगे २ चलता था। वहां पहुंचते ही "थिबाऊ" और 'पिल्हाऊ' दोनों सगुन हुये जिस्से सरदारों और गरोह के लोगों को इस दुबारा सगुन होने पर निहायत खुशी हासिल हुई। दूसरे दिन सुबह को हमलोग रवाने हुए और चलते २ एक छोटी सी नदी के किनारे पहुंचे, वहां गरोह के तमाम लोग बैठ गए और कुछ गुड़ और दाल जो हमलोग साथ लाये थे सभों ने हिस्सा लगाकर खाया। आगे बढ़ते ही फिर उमदे सगुन हुये जिनसे मालुम हुआ कि इस चढ़ाई में बहुत जल्द कोई गहिरा माल हमलोगों के हाथ लगेगा।

मुझे ये सब बातें निहायत अजीब जान पड़ती थीं और मैं उनका मतलब कुछ भी न समझता था, मगर हर एक शख्स का पक्का ईमान इन सगुनों पर, और तमाम रसूमातों का सिलसिलेवार मौके २ पर होना देख कर मुझे इस बात का पूरा एतकाद होगया कि इनका होना ज़रूरी अम्र है। गोकि उस वक़्त मैं इन सब बातों को बेवकूफी समझ कर तब तक हिकारत की निगाह से देखता था जब तक खुद मुसीबत में गिरफ़ार होकर मेरी अक्ल दुरुस्त न हुई; इसमें कोई शक नहीं कि उन मुसीबतों को भवानी ने मेरी गुस्ताखी की सज़ा में भेजी थीं।

चन्द रोज़ में हमलोग गनेशपुर पहुंचे पर अब तक कोई शिकार हाथ न लगा। शहर पहुंचने पर हमलोगों ने "सूदों" को शहर में भेजा और आप एक अमराई में शहर के बाहर डेरा खड़ा कर दिया। इन सूदों का यह काम था कि मुसाफिरों को बरगला याने मीठी २ बातों से भुलाकर ठगों के हाथ में

कर देना; वे लोग इसी काम के लिये अपना हिस्सा पाते थे। दिन भर तो वे लोग शहर में थे और जब लौटे तो हमलोगों ने बड़े इश्तियाक से पूछा कि क्या खबर है। जो लोग इस काम पर भेजे गये थे वे दोनों हिन्दू थे, एक का नाम बद्रीनाथ था जो जात का ब्राह्मण था और जिसका ज़िक्र मैं पहिले कर चुका हूं, दूसरा शख्स किसी छोटी रज़ील कौम का गोपाल नामी था, मगर ये दोनों शख्स अपने काम में निहायत होशियार और चालाक थे और मैंने सुना था कि ये कभी अपने निशाने से न चूकते थे। मुझे शहर की खबर सुनने का निहायत शौक हो रहा था सो जब मेरे वालिद उस गरोह में शरीक हुये तो मैं भी उनके पास बैठ कर सब हाल सुनने लगा।

बद्रीनाथ ने कहा कि "मैं तमाम बाज़ार में घूमता रहा पर कहीं कोई शिकार न दिखलाई पड़ा, तब तक मेरा ख्याल एक दूकान पर पड़ा; देखता क्या हूं कि एक इज्ज़तदार अशराफ़ शख्स एक बनियें से झगड़ रहा है। मैं उसके पास गया; इतने में उस ज़ईफ़ असराफ़ शख्स ने उस बनियें को जिसने उसे कुछ धोखा देना चाहा था धर लिया और गुस्से के जोश में मुझ से कहने लगा कि आप गवाह रहियेगा मैं इस शख्स को इसकी बेईमानी के लिये बेशक कोतवाल साहब के पास ले चलूंगा"।

वह बनियां निहायत शोख था और उसे सैकड़ों गालियां देने लगा खैर बमुश्किल तमाम मैंने किसी किसी तरह उसे धमका धमका कर चुप किया और झगड़ा तै कराया। वह शख्स मुझ से निहायत खुश हुआ और जब हमलोग बनियें की दूकान से बाहम् रवाने हुए वह मुझ से पूछने लगा कि आप कौन हैं और कहां तशरीफ़ ले जाते हैं। मैंने देखा कि यह मौका निहायत उमदा है कि उसे इस बात का खौफ़ दिलया जाय कि यह मुकाम मुसाफिरों को एक रात भी टिकने के लिये महफूज नहीं है। उसकी बात चीत से मैंने मालुम किया कि वह राजा नागपुर के यहां का फारसी लिखनेवाला मुतसद्दी है और अपने बेटे के साथ वहीं जाता है।

जहां तक मुझ से हो सका मैंने उसे रास्ते के चोर और ठगों का अहवाल सुना कर निहायत खौफ़ दिलाया और अपने तईं यह ज़ाहिर किया कि